इकाई –3

लघु उत्तरात्मक व वस्तुनिष्ठ प्रश्न

राजनीतिक सिद्धान्तः अर्थ, स्वरूप, क्षेत्र और महत्त्व

(Political Theory : Meaning, Nature, Scope and Significance)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: राजनीतिक सिद्धान्त की परिभाषा दीजिए।

Define Political Theory.

उत्तरः राजनीतिक सिद्धान्त (Political Theory) को अंग्रेजी में 'पोलिटिकल थ्यूरी' कहा जाता है। 'थ्यूरी' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'थ्योरिया' (Theoria) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है – एक ऐसी मानसिक दृष्टि जो कि एक वस्तु के अस्तित्व और कारणों को प्रकट करती है। केवल वर्णन या किसी लक्ष्य के विषय में कोई विचार या सुझाव ही सिद्धान्त नहीं कहलाता। आर्नोल्ड ब्रैशर (Political Theory) के शब्दों में, ''किसी भी विषय के संबंध में एक लेखक की पूरी की पूरी सोच या समझ शामिल रहती है, उसमें तथ्यों का वर्णन, उनकी व्याख्या, लेखक का इतिहास–बोध, उसकी मान्यताएँ और वे लक्ष्य शामिल हैं, जिनके लिए किसी भी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जाता है।''

विभिन्न विद्वानों ने राजनीतिक सिद्धान्त की भिन्न–भिन्न परिभाषाएँ दी है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैंः–

1. डेविड हैल्ड (David Held) के अनुसार, ''राजनीतिक सिद्धान्त राजनीतिक जीवन से संबंधित अवधारणों और व्यापक अनुमानों का एक ऐसा ताना–बाना है, जिसमें शासन, राज्य और समाज की प्रकृति व लक्ष्णों और मनुष्यों की राजनीतिक क्षमताओं का विवरण शामिल है।''
2. एण्ड्रयू हैकर (Andrew Hacker) के शब्दों में, ''राजनीतिक सिद्धान्त एक ओर बिना किसी पक्षपात के अच्छे राज्य तथा समाज की तलाश है तो दूसरी ओर राजनीतिक एवं सामाजिक वास्तविकताओं की पक्षपात–रहित जानकारी का मिश्रण है।''
3. कोकर (Cocker) के अनुसार, ''जब राजनीतिक शासन, उसके रूप एवं उसकी गतिविधियों का अध्ययन केसल अध्ययन या तुलना मात्र के लिए ही नहीं किया जाता अथवा उनको समय के और अस्थायी प्रभावों के संदर्भ में ही नहीं आंका जाता, बल्कि इनको लोगों की आवश्यकताओं, इच्छाओ एवं उनके मतों के सन्दर्भ में घटनाओं को समझा व इनका मूल्य आंका जाता है, तब हम इसे राजनीतिक सिद्धान्त कहते हैं।''

ऊपर दी गई परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक सिद्धान्त मुख्यतः दार्शनिक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से राज्य का अध्ययन करता है। राजनीतिक सिद्धान्त में तीन तत्व शामिल है। (i) अवलोकन, (ii) व्याख्या, (iii) मूल्यांकन।

प्रश्न 2: राजनीतिक सिद्धान्त के कार्य–क्षेत्र से संबंधित किन्हीं चार विषयों का उल्लेख कीजिए।

उत्तरः आज के युग में मनुष्यों के जीवन का कोई भाग ऐसा नहीं है जो राजनीति से अछूता रह सके। उदारवादियों (Liberals) ने राज्य तथा राजनीति का संबंध केवल सरकार तथा नागरिकों तक ही सीमित रखा, जबकि मार्क्सवादियों (Marxist) ने उत्पादन के सभी साधनों पर राज्य का स्वामित्व माना है। अब

राजनीतिक विज्ञान का क्षेत्र बहुत ही व्यापक हो गया है। राजनीतिक सिद्धान्त की विषय वस्तु से संबंधित चार विषयों का वर्णन निम्नलिखित हैः–

1. **राज्य का अध्ययन (Study of State)**:– प्राचीन काल से ही राज्य की उत्पत्ति, प्रकृति तथा कार्य–क्षेत्र के बारे में विचार होता रहा है। राज्य की उत्पत्ति कैसे हुई? उसका विकास कैसे हुआ? नगर–राज्य से लेकर अब तक राष्ट्रीय राज्य के रूप में पहुंचने तक इसके स्वरूप में कैसा विकास हुआ? राज्य से संबंधित प्रत्येक गतिविधि को राजनीतिक सिद्धान्त की विषय–वस्तु में सम्मिलित किया जाता है।
2. **मानव व्यवहार का अध्ययन (Study of Human Behaviour)**:– राजनीति के आधुनिक विद्वानों ने राजनीतिक व्यवहार को राजनीतिक शास्त्र का मुख्य विषय माना है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि राजनैतिक क्षेत्र में व्यक्ति जो कुछ करता है उसके पीछे जो प्रेरणाएँ कार्य करती है, उनका अध्ययन राजनीतिक सिद्धान्त में होना चाहिए।
3. **सरकार का अध्ययन (Study of Government)**:– सरकार ही राज्य का वह तत्व है, जिसके द्वारा राज्य की इच्छा का अभिव्यक्ति होती है। सरकार राजनीतिक सिद्धान्त के क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण विषय है।
4. **नीति निर्माण प्रक्रिया (Study of Policy Formuolation)**:– आधुनिक विद्वानों के अनुसार नीति–निर्माण प्रक्रिया का भी राजनीतिक सिद्धान्त का क्षेत्र में अध्ययन किया जाना चाहिए। इस एक विषय में उन सब साधनों का अध्ययन होना आवश्यक है, जोकि शास्त्र में विधान–पालिका तथा कार्य पालिका के शासन संबंधी कार्यों, मतदाताओं, राजनीतिक दल, उनके संगठन तथा उनको प्रभावित करने वाले तत्वों का भी अध्ययन किया जाता है।

प्रश्न 3: परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त (Classical or Traditional Political Theory) की किन्हीं चार विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तरः राजनीतिक सिद्धान्त (Political Theory) का इतिहास बहुत पुराना है। मुख्य रूप से इसे दो भागों में बांटा जा सकता है – (i) शास्त्रीय अथवा परम्परागत चिन्तन (Classicial or Traditional Theory), तथा (ii) आधुनिक राजनीतिक चिंतन (Modern Political Theory), परम्परागत राजनीतिक चिन्तन से संबंधित लेखकों में प्लेटो (Plato), अरस्तू (Aristotee), हाब्स (Hobbes), लॉक (Locke), केंट (Kant), हीगल (Hegal), कार्लमार्क्स (Karl Marks), तथा मान्टेस्क्यू (Montesquiu) आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वर्तमान शताब्दी के कई लेखकों–लार्ड ब्राईस (Lord Byce), मैंकाइवर (Macivor) तथा लॉस्की (Laski) को भी इसी श्रेणी में शामिल किया जाता है।

परम्परागत सिद्धान्त की विशेषताएँ (Characteristics of Classical or Traditional Political Theory)

परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैः–

1. **मुख्यतः कानूनी, औपचारिक तथा संस्थागत अध्ययन (Mostly legal, formal and Institutional study)**:– परम्परागत अध्ययन मुख्यतः संविधान द्वारा निर्मित औपचारिक संस्थाओं से संबंधित था। उस काल के लेखकों ने इस बात का प्रयास नहीं किया कि संस्था के औपचारिक रूप से बाहर जाकर उसके व्यवहार का अध्ययन किया जाए जिससे उसके विशिष्ट व्यवहार का परीक्षण किया जा सके।
2. **मुख्यतः आदर्शात्मक (Mostly Ideal)**:– परम्परात चिन्तकों ने कुछ आदर्शों को पहले ही स्वीकार कर लिया फिर इन्हीं मान्यताओं की कसौटी पर अन्य देशों की राजनीतिक संस्थाओं व शासन को परखा। प्लेटो (Plato) व रूसो (Rousseau) आदि ने इसी आधार पर चिन्तन किया है।

3. **मुख्यतः वर्णनात्मक अध्ययन (Mostly Descriptive)**:– परम्परागत चिंतन मुख्यतः वर्णनात्मक है। इसका अर्थ यह है कि इसमें राजनीतिक संस्थाओं का केवल वर्णन किया गया है। इसके माध्यम से राजनीतिक समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया गया है।

4. **परम्परागत चिंतन पर दर्शन धर्म तथा नीतिशास्त्र का प्रभाव (Influence of Philosophy, Religion and Ethics)**:– परम्परागत चिंतन दर्शन तथा धर्म से प्रभावित रहे हैं तथा उनमें नैतिक मूल्य विद्यमान रहे हैं।

प्रश्न 4: आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त (Modern Political Theory) की किन्हीं चार प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तरः विशेषताएँ (Characteristics)

आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:–

1. **अध्ययन की अन्तशास्त्रीय पद्धति (Inter Disciplinary Study)**:– आधुनिक विद्वानों की यह मान्यता है कि राजनीतिक व्यवस्था समाज व्यवस्था की अनेक उप–व्यवस्थाओं (Multi-System) में से एक है और इन सभी व्यवस्थाओं का अध्ययन अलग–अलग नहीं किया जा सकता। राजनीतिक व्यवस्था पर समाज की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवस्थाओं का पर्याप्त प्रभाव ठीक ढंग से समझने के लिए उस समाज की आर्थिक (Economics), सामाजिक (Social), धार्मिक (Religous) तथा सांस्कृतिक (Cultural) व्यवस्थाओं का अध्ययन करना आवश्यक है। यही पद्धति अन्तःशास्त्रीय पद्धति कहलाती है।

2. **विश्लेषणात्मक अध्ययन (Analytical Study):–** आधुनिक विद्वानों ने विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को अपनाया है। वे संस्थाओं के सामान्य वर्णन से सन्तुष्ट नहीं थे, क्योंकि वे राजनीतिक वास्तविकताओं को समझना चाहते थे। इस कारण से उन्होंने व्यक्तियों व संस्थाओं के वास्तविक व्यवहार को समझने के लिए अनौपचारिक संरचनाओं, राजनीतिक प्रक्रियाओं व व्यवहार के विश्लेषण पर बल दिया। ईस्टन (Easton), डहल (Dahl), वेबर (Weber), आमण्ड (Almend), इत्यादि अनेक विद्वानों ने व्यक्ति के कार्यों व उसके व्यवहार पर अधिक बल दिया। इनके विश्लेषण से राजनीतिक व्यवस्था को समझना आसान है।

3. **आनुभाविक अध्ययन (Empirical Study)**:– राजनीति के आधुनिक विद्वानों ने राजनीति को शुद्ध विज्ञान बनाने के लिए राजनीतिक तथ्यों के माप–तोल पर बल दिया है। यह तथ्य–प्रधान अध्ययन है जिसमें वास्तविकताओं का अध्ययन होता है।

4. **अनौपचारिक कारकों का अध्ययन (Study of Informal Factors)**:– आधुनिक विद्वान अनौपचारिक कारकों का अध्ययन करना आवश्यक समझते हैं, जो राजनीतिक संगठन के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यह जनमत (Public Opion), मतदान (Voting), आचरण (Behaviour), विधान मण्डल (Legislature) कार्यपालिका (Executive), न्यायपालिका (Judiciary), राजनीतिक दल (Politcal Party), दबाव समूहों (Pressure Group) तथा जन सेवकों (Public Servant) के अध्ययन पर भी बल देते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: 'थ्यूरी' (Theory) शब्दी की उत्पत्ति 'थ्योरिया' शब्द से हुई है। यह शब्द निम्नलिखित भाषा का है:–

(क) अंग्रेजी (ख) ग्रीक
(ग) टयूटोनिक (घ) फ्रेंच

प्रश्न 2: निम्नलिखित का अध्ययन राजनीतिक सिद्धान्त के क्षेत्र में शामिल है:–

(क) राज्य तथा सरकार (ख) शक्ति
(ग) नारीवाद (घ) उपरोक्त तीनों

प्रश्न 3: राजनीतिक सिद्धान्त को मुख्यतः कितने भागों में बांटा गया है?

(क) दो (ख) तीन
(ग) चार (घ) पाँच

प्रश्न 4: निम्नलिखित में से किस विद्वान ने सिद्धान्त को 'जाल' कहा है?

(क) डेविड हैल्ड (ख) एण्ड्रयू हैंकर
(ग) कार्ल पॉपर (घ) कोकर

प्रश्न 5: निम्नलिखित में से किसे पहला राजनीतिक वैज्ञानिक कहा जाता है:–

(क) प्लेटो (ख) अरस्तू
(ग) मार्क्स (घ) मैक्यावली

प्रश्न 6: निम्नलिखित में परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त का लक्षण नहीं है:–

(क) आदर्शात्मक अध्ययन
(ख) कानून, औपचारिक तथा संस्थागत अध्ययन
(ग) वर्णनात्मक अध्ययन
(घ) अन्तःशास्त्रीय पद्धति

प्रश्न 7: निम्नलिखित में राजनीतिक सिद्धान्त के तत्व माने जाते हैं?

(क) अवलोकन (ख) व्याख्या
(ग) मूल्यांकन (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 8: निम्नलिखित में आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त का लक्षण नहीं है।

(क) आनुभाविक अध्ययन (ख) विश्लेषणात्मक अध्ययन
(ग) अनौपचारिक कारकों का अध्ययन (घ) आदर्शात्मक अध्ययन

प्रश्न 9: राजनीतिक सिद्धान्त

(क) भविष्य की योजना सम्भव बनाता है।
(ख) समस्याओं के समाधान में सहायक होता है।
(ग) अनुगामियों का मार्ग दर्शन करता है।
(घ) उपरोक्त तीनों कार्य करता है।

प्रश्न 10: निम्नलिखित आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त का लक्षण है –

(क) दर्शन तथा धर्म का प्रभाव
(ख) मुख्यतः वर्णात्मक अध्ययन
(ग) मुख्य कानूनी औपचारिक तथा संस्थागत अध्ययन
(घ) अन्तःशास्त्रीय अध्ययन

प्रश्न 11: आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त की निम्न एक विशेषता है –

(क) आनुभाविक (ख) अन्तःशास्त्रीय
(ग) वैज्ञानिक (घ) ये सभी

उत्तरः (1) ख, (2) घ, (3) क, (4) ग, (5) ख, (6) घ, (7) घ, (8) घ, (9) घ, (10) घ, (11) घ

'शक्ति' की अवधारणा

(Concept of "Power")

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: 'शक्ति' की परिभाषा दीजिए।

उत्तरः 'शक्ति' "David Held" शब्द का अर्थ बताना अथवा उसकी व्याख्या करना आसान नहीं है। इसका कारण यह है कि शक्ति के लिए बल, प्रभुत्व, प्रभाव तथा अन्तर्निहित शक्ति का प्रयोग होता रहा है। विभिन्न विद्वानों द्वारा शक्ति की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी गई हैः–

1. मैकावइर के अनुसार (Macivar) ''शक्ति से हमारा अभिप्राय व्यक्तियों या व्यवहार को नियन्त्रित, विनियमित और निर्देशित करने की क्षमता से है।''
2. टॉवनी (Towney) के शब्दों में, ''व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह की, दूसरों का आचरण अपनी इच्छानुसार मोड़ लेने की क्षमता ही शक्ति है।''
3. डेविड़ ईस्टन (David Easton) के शब्दों में, ''शक्ति (सत्ता) वह संबंध व्यवस्था है, जिसमें व्यक्तियों को एक समूह अपने साध्यों (ends) की दिशा में दूसरे समूह की क्रियाओं (Actions) को निर्धारित कर सकता है।''
4. मैक्स वेबर (Max Weber) के शब्दों में, ''शक्ति वह संभावना है, जिसमें एक कर्मी (Actor) किसी एक सामाजिक संबंध के बीच इस स्थिति में होगा कि प्रतिरोध के बावजूद अपनी बात मनवा ना ले भले ही इस संभावना का आधार कुछ भी क्यों न हो।''
5. पामर (Palmer) के अनुसार, ''शक्ति से हमारा अभिप्राय दूसरों के निर्णयों, नीतियों, मूल्यों या भाग्यों को प्रभावित या नियंत्रित की क्षमता से है।''

प्रश्न 2: शक्ति (Power) की मुख्य विशेषताएँ (Characteristics) लिखिए।

उत्तरः शक्ति की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैः–

1. **एक लक्ष्य है(Aim or Object)**:–राबर्ट डहल (Robert Dahl) ने शक्ति को एक लक्ष्य माना है। उसका कहना है कि प्रायः मनुष्य अपना प्रभाव बनाने या बढ़ाने के लिए राज्य के ऊपर अपना नियंत्रण कायम करने की कोशिश करते हैं। इस बारे में राबर्ट वासर्यटेड (Robert Bistead) का कहना है कि शक्ति हमेशा छिपी रहती है और उसका प्रकट रूप हमें बल (Power) तथा सत्ता (Authority) में दिखाई देता है।
2. **एक साधन(Means)**:–कैटलिन (Catlin) शक्ति की इच्छा को जन्मजात मानकर भी उसे एक तटस्थ साधन (Neutral means) मानता है। इसका अर्थ यह है कि शक्ति (Power) अपने–आप में अच्छी या बुरी नहीं होती। अच्छाई या बुराई उसके प्रयोग या उपयोग पर निर्भर करती है।
3. **एक स्वतन्त्र तत्व है (An Independent Matter)**:–कई विद्वान जैसे मैक्यावली (Machiaveli), हाब्स (Hobbes), ग्राहम–वालास (Grraham Wallace) आदि शक्ति (Power) को स्वतन्त्र तत्व मानते हैं। उनका कहना है कि शक्ति विरोध के होते हुए भी एक व्यक्ति, व्यक्ति–समूह, राष्ट्र या राष्ट्र समूह द्वारा अन्यों पर अपनी इच्छा के लादने से संबंधित होने की वजह से मानवीय संबंधों का विशेषरूप बन जाती है, जिसमें दो पक्षों का होना अनिवार्य है एक, शक्ति (Power) से विवश होकर कार्य करने वाला।
4. **दमन या पुरस्कार मौजूद होता है(Award or Punishment)**:–शक्ति के पीछे दमन (Punishment) मौजूद रहता है। दमन या स्वरूप प्रत्येक जाति, समाज और देश में अलग–अलग होता है। इसके साथ ही शक्ति

(Power) के प्रयोग में पुरस्कार (Reward) का तत्त्व भी हो सकता है। कैटलिन ने इसलिए राजनीति को 'शक्ति राजनीति' (Power Politics) या उसे शक्ति पर आधारित बताया है।

प्रश्न 3: शक्ति के किन्हीं चार स्त्रोतों (Sources) का वर्णन कीजिए।

उत्तर: शक्ति के चार स्त्रोत निम्नलिखित हैं

1. **ज्ञान (Knowledge)**:–मानवीय क्षेत्र में शक्ति का महत्वपूर्ण स्त्रोत ज्ञान है। साधारण अर्थ में ज्ञान व्यक्ति या व्यक्ति समूह को अपने लक्ष्यों (Aims) को पूरा करने की योग्यता प्रदान करता है। मनुष्य शेर, हाथी, चीते आदि से अधिक शक्तिशाली इसलिए माना जाता है क्योंकि उसमें ज्ञान है। ज्ञान व्यक्ति के कष्टों को दूर करके उसे उन साधनों को पाने की क्षमता भी देता है, जिनके अभाव में व्यक्ति या समाज का जीवन सुरक्षित और स्वतन्त्र नहीं रह सकता।

2. **संगठन(Organisation)**:–संगठन अपने आप में शक्ति का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। कहावत भी है कि संगठन में शक्ति है (Unity of strength) आधुनिक समय के मजदूर संघ या व्यापारिक–वाणिज्यिक संगठन इसी सच्चाई की पुष्टी करते हैं। शक्ति (Power) की दृष्टि से राज्य ही सबसे बड़ा संघ है और इसका कारण राज्य का सबसे अधिक संगठित रूप है।

3. **वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति(Scientific and Technical Progress)**:–वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति भी शक्ति का एक प्रमुख स्त्रोत है। आज के इस युग में कोई भी राज्य नवीनतम वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति किए बिना शक्तिशाली नहीं बन सकता।

4. **प्राप्तियाँ–ज्ञान शक्ति(Possessions Knowledge of Power)**:–प्राप्तियों में भौतिक सामग्री, स्वामित्व और सामाजिक सामग्री की शक्ति, व्यक्ति द्वारा अपनाई गई परिस्थिति और स्तर आदि शामिल है।

प्रश्न 4: राजनीतिशक्ति(Political Power) के आधारों (Basis) का वर्णन करें।

उत्तर: प्रत्येक राज्य में शासन की शक्ति का प्रयोग एक या कुछ या बहुत से व्यक्ति करते हैं। आज के लोकतंत्रीय युग में जनता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में शासन में भाग लेती है। राजनीतिक शक्ति के चार आधार माने जाते हैं:–

(i) वंशानुगत आधार (Hereditary)
(ii) चुनाव में विजय (Electrol Victory)
(iii) वर्तमान शासन का तख्ता उलटकर स्वयं शासक बनना (Mutiny or Revolt)
(iv) सैनिक विजय (Military conquest)

प्रश्न 5: आर्थिक स्थिति (Economic Power) किसे कहते हैं?

उत्तर: शक्ति का आर्थिक (Economic) आधार भी बड़ा प्रभावशाली होता है। यह सत्य है कि जिसके पास आर्थिक शक्ति है उसका राजनीतिक शक्ति पर भी प्रभाव तथा नियंत्रण होता है। देश के भौतिक साधनों, टैक्नोलॉजी, उद्योग–धन्धों, अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार आदि का राजनीतिक शक्ति पर काफी प्रभाव पड़ता है। मार्क्स (Marx) का कहना है कि समाज में अमीर और गरीब दो वर्ग हैं और शासन की शक्ति अमीर वर्ग के हाथ में होती है जो उस शक्ति पर प्रयोग अपने हितों की रक्षा तथा गरीबों का शोषण करने के लिए करता है। राबर्ट डहल (Robert Dahl) का कहना है कि जिस देश में भौतिक साधन कुछ व्यक्तियों के हाथों में होते हैं और समस्त जनता गरीब होती है वहाँ निरंकुश शासन की बहुत अधिक सम्भावना होती है। जहाँ अधिकतर जनता समृद्ध होती है वहाँ लोकतन्त्र शासन सफल होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: 'शक्ति राजनीति का हृदय है' – यह कथन किस लेखक का है?

(क) बेकर (ख) बर्क
(ग) हॉब्स (घ) फ्रेडरिक

प्रश्न 2: 'शक्ति की परिभाषा प्रभाव के एक विशेष रूप में की जाती है। इस रूप में शक्ति प्रयुक्त करने वाले की आज्ञा का पालन न करने पर बहुत हानि उठानी पड़ती है।' – यह कथन किस लेखक का है?

(क) राबर्ट (ख) टोनी
(ग) कैटलिन (घ) हॉब्स

प्रश्न 3: 'राजनीति शक्ति का विज्ञान है' – ये शब्द किस विद्वान के है?

(क) कैटलिन (ख) बर्नहाडी
(ग) रोबसन (घ) ईस्टन

प्रश्न 4: राजनीतिक शक्ति निम्नलिखित में से एक है –

(क) एक पक्षीय (ख) द्विपक्षीय
(ग) त्रिपक्षीय (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5: 'शक्ति तथा और शक्ति प्राप्त करने की कामना ही जीवन है' – ये शब्द किस विद्वान ने कहे?

(क) लॉक (ख) हॉब्स
(ग) रूसो (घ) मैरियम

प्रश्न 6: 'राजनीतिक शक्ति का पता उन लोगों की क्षमता को देखने से लगता है, जो अपने निर्णयों का पालन करवाने के लिए सरकार के यन्त्रों पर नियन्त्रण रखते हैं' – ये शब्द किस लेखक के हैं?

(क) प्रो० एलन (ख) हटिमान
(ग) बेकर (घ) रूसो

प्रश्न 7: उदारवादियों के अनुसार शक्ति निम्नलिखित के पास है–

(क) केवल राज्य के पास (ख) एक समुदाय के पास
(ग) विभिन्न समुदायों के पास (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 8: मार्क्सवादियों के अनुसार राजनीतिक शक्ति निम्नलिखित के पास है:–

(क) पूंजीपतियों के पास (ख) श्रमिकों के पास
(ग) जनता के पास (घ) सरकार के पास

प्रश्न 9: ''बन्दूकों, जहाजों, किलों और टैकों की कतारों में शक्ति का निवास नहीं है। इन सबका अपना महत्व है, परन्तु वास्तविक राजनीतिक शक्ति लोगों की भावना में निवास करती है।'' ये शब्द किस लेखक के हैं?

(क) मैरियम (ख) लासवैल
(ग) दण्ड (घ) लास्की

प्रश्न 10: शक्ति के प्रयोग के संबंध में निम्नलिखित एक सही है –

(क) अनुनय (ख) पुरस्कार
(ग) दण्ड (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर: (1) घ, (2) क, (3) क, (4) ख, (5) ख, (6) क, (7) ग, (8) क, (9) क, (10) घ

सत्ता की अवधारणा

(Concept of Authority)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: सत्ता (Authority) का क्या अर्थ है?

उत्तरः सत्ता शब्द जिसे अंग्रेजी में (Authority) कहते हैं, कि उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द 'आक्टोराइटस' (Auctoaritces) से हुई, जिसका अर्थ 'सहमति' अथवा 'स्वीकृति' है। विभिन्न विद्वानों द्वारा सत्ता की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी गई हैंः–

1. राबर्ट डहल (Rovert Dahl) के शब्दों में ''औचित्यपूर्ण शक्ति या प्रभाव को प्रायः सत्ता कहते हैं।''
2. मैकाइवर (Macivar) के शब्दों में ''सत्ता आदेशों का पालन करवाने की शक्ति है।''
3. जोवेनल (Jovenal) के अनुसार, ''सत्ता दूसरे व्यक्ति की स्वीकृति प्राप्त करने का गुण है।''
4. बीच (Beech) के शब्दों में, ''दूसरों को प्रभावित करने या निर्देशित करने के औचित्यपूर्ण अधिकार को सत्ता कहते हैं।''
5. हन्ना आरेण्ट (Hanna Arrant) के अनुसार, ''सत्ता का अभिप्राय वह शक्ति है जो इच्छा पर आधारित है। उसका मुख्य तत्व उन लोगों द्वारा इसे बिना शर्त के मान्यता देना है, जिनको इसका पालन करने के लिए कहा गया गया है। इसके लिए न तो दमन कीर आवश्यकता है और न ही समझाने–बुझाने की।''

प्रश्न 2: सत्ता के कोई चार तत्व(Element) एवं विशेषताएँ (Characteristics) बताइए।

उत्तरः सत्ता के चार तत्व निम्नलिखित हैः–

1. **शक्ति नहीं है (Not Power Alone)**:–फ्रेडिक (Fredrick) के अनुसार, ''सत्ता शक्ति की प्रकार नहीं है, परन्तु एक ऐसा तत्व है जो शक्ति के साथ जुड़ा होता है। यह एक ऐसा गुण है, जो शक्ति उत्पन्न करता है, परन्तु यह स्वयं शक्ति नहीं है।
2. **प्रभुत्व(Influence)**:–राजनीतिक सत्ता का राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभुत्व रहता है।
3. **विवेक पर आधारित होना(Rational)**:–विवेक सत्ता का मूल तत्व है। सत्ता की स्वीकृति केवल ठोस तर्कों पर आधारित होती है, बल पर नहीं।
4. **पदसोपान(Hereditary)**:–सत्ता सदैव श्रृंखलाबद्ध होती है। सत्ता की श्रृंखलाबद्धता इस तथ्य को निश्चित करती है कि कौन किसका आदेश मानेगा। सत्ताधारी अपने अधीनस्थ से आदेशानुसार कार्य करवाने की क्षमता रखता है।

प्रश्न 3: सत्ता के किन्हीं चार रूपों (Kinds) का वर्णन करें।

उत्तरः सत्ता के चार रूप (Kinds) निम्नलिखित हैं

1. **परम्परागत सत्ता (Traditional Authority)**:–जब अधीनस्थ व्यक्ति उच्च अधिकारियों की आज्ञाओं का पालन करना इस आधार पर स्वीकार करते हैं कि ऐसा सदा से होता है, तो इस प्रकार की सत्ता को परम्परागत सत्ता कहा जाता है।

2. **संवैधानिक सत्ता(Constitutional Authority)**:–जब किसी व्यक्ति को संविधान द्वारा सत्ता प्राप्त होती है तो उसे संवैधानिक सत्ता कहा जाता है। भारत में राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री को संविधान द्वारा जो शक्तियाँ दी गई है, उन्हें संवैधानिक सत्ता कहा जाता है।

3. **औचित्यपूर्ण सत्ता(Legitimate Authority)**:–वह सत्ता जो संविधान अथवा कानून के अनुसार उचित हो। उदाहरण–स्वरूप लोकतन्त्र में जनता द्वारा चुनी गई सरकार की सत्ता औचित्यपूर्ण होती है।

4. **अवैध सत्ता(Illegitimate Authority)**:–जो सत्ता कानून अथवा संविधान के अनुसार न होकर अनुचित साधनों, छलकपट या सैनिक विद्रोह आदि द्वारा प्राप्त हो उसे अवैध सत्ता कहा जाता है।

5. **धार्मिक सत्ता(Religious Authority)**: जिस सत्ता को किसी धर्म के सिद्धान्तों द्वारा मान्यता दी जाती है और उसका पालन किया जाता है तो उसे धार्मिक सत्ता कहते हैं। ईसाई धर्म को मानने वालों के लिए पोप (Pope) की सत्ता इस प्रकार की सत्ता का उदाहरण है।

प्रश्न 4: सत्ता(Authority) तथा शक्ति (Power)**में कोई चार भेद** (Difference) बताइए।

उत्तर: सत्ता तथा शक्ति (Autority and Power) में निम्नलिखित आधार पर भेद किया जा सकता है–

1. **बल तथा कानून (Force and Law)**: शक्ति बल पर जबकि सत्ता नियमों व धारणाओं पर आधारित होती है। शक्ति का आधार प्रायः बल होता है। दूसरी ओर कानूनों, नियमों, धारणाओं विश्वासों तथा मूल्यों के अनुसार अपने निर्णयों को दूसरे पर लागू करना सत्ता कहलाएगा।

2. **विवेक (Reason or Rational)**: सत्ता में विवेक का अंश होता है, जबकि शक्ति में यह अंश नहीं होता।

3. **वैध तथा अवैध (Legal and Legitimate or Illigitimate)**: शक्ति वैध तथा अवैध दोनों हो सकती है, परन्तु सत्ता वैध होती है।

4. **क्षमता तथा स्वीकृति (Capacity and Consent)**: शक्ति अन्यों के व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता है, जबकि सत्ता अन्यों की स्वीकृति प्राप्त करने की क्षमता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: सत्ता जिसे अंग्रेजी में (Authority) कहते हैं कि उत्पत्ति लेटिन भाषा के निम्नलिखित शब्द से हुई है –

(क) स्टेटस (ख) सिविटास
(ग) आक्टोराईटस (घ) सुपरेनस

प्रश्न 2: 'उचित शक्ति' को प्रायः सत्ता कहा जाता है, यह कथन है –

(क) राबर्ट ए० डहल (ख) डेविड ईस्टन
(ग) लासवैल (घ) कैटलिन

प्रश्न 3: 'सत्ता दूसरे व्यक्ति की स्वीकृति प्राप्त करने का गुण है'', यह कथन किसका है?

(क) टॉनी (ख) डेहिड ईस्टर्न
(ग) जोवैनल (घ) राबर्ट डहल

प्रश्न 4: 'सत्ता आदेशों का पालन करवाने की शक्ति है'', यह कथन है –

(क) राबर्ट ए० डहल (ख) लासवेल
(ग) डेविड ईस्टन (घ) उपरोक्त तीनों में से

प्रश्न 5: निम्नलिखित सत्ता का आधार है –

(क) संविधानप (ख) अनैतिकता

(ग) बल (घ) अत्याचार

प्रश्न 6: सत्ता तथा शक्ति

(क) परस्पर विरोधी है (ख) एक ही धारणा के दो नाम है

(ग) दो अलग–अलग अवधारणाएँ हैं (घ) दोनों में कोई संबंध नहीं है

प्रश्न 7: सत्ता की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित ठीक है –

(क) स्वीकृति (ख) परम्परागत सत्ता

(ग) राजनीतिक सत्ता (घ) अवैध सत्ता

प्रश्न 8: "Politics-who gets? What? When? and How?" नामक पुस्तक किस निम्नलिखित विद्वान ने लिखी है–

(क) राबर्ट ए० डहल (ख) लासवैल

(ग) डेविड ईस्टन (घ) बैकर

प्रश्न 9: ''सत्ता से मेरा अभिप्रायः व्यक्ति की वह योग्यता है जिसे द्वारा वह अपनी योजनाओं को स्वीकृत करवाता है'' यह कथन है –

(क) जोविनल (ख) डेविड ईस्टन

(ग) राबर्ट ए० डहल (घ) लासवैल

उत्तरः (1) ग, (2) क, (3) ग, (4) क, (5) क, (6) ग, (7) क, (8) ख, (9) क।

नागरिकता

(Citizenship)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: नागरिक (Citizen)की परिभाषाएँ क्या है?

उत्तरः नागरिक की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ निम्नलिखित हैंः–

1. अरस्तू (Aristotle) के अनुसार, ''किसी राज्य का नागरिक वह व्यक्ति है, जिसको उस राज्य के विधान कार्य अथवा न्याय–प्रशासन में भाग लेने का पूर्ण अधिकार है।''
2. मिलर (Miller) के अनुसार, ''नागरिक एक राजनीतिक समाज के सदस्य होते हैं। उन्हीं लोगों से राज्य बना है और वे व्यक्तिगत तथा सामूहिक अधिकारों की रक्षा के लिए, एक सरकार की स्थापना कर लेते हैं या उसकी सत्ता स्वीकार कर लेते हैं।''
3. वाटाल (Vattal) के अनुसार, ''नागरिक किसी राज्य के वे सदस्य हैं, जो उस राज्य के प्रति कुछ कर्तव्यों से बंधे हैं, उनकी सत्ता के नियंत्रण में रहते हैं तथा उसके भाग में सबसे साथ बराबरी के साझेदार है।''
4. ए०के० सियू (A.K. Sieu) के अनुसार, ''नागरिक वह व्यक्ति है जो राज्य के प्रति वफादार हो, जिसे सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकार प्राप्त हों और जो समाज–सेवा की भावना से प्रेरित हो।''

प्रश्न 2: नागरिकता (Citizenshio) की परिभाषाएँ क्या हैं?

उत्तरः नागरिकता नागरिक का कानूनी दर्जा है, जिसके आधार पर उसे किसी राज्य के राजनीतिक अधिकार प्राप्त होते हैं। विभिन्न विद्वानों द्वारा नागरिकता की परिभाषा निम्नलिखित प्रकार से की गई हैः–

1. लॉस्की (Laski) के अनुसार, ''अपनी प्रशिक्षित बुद्धि को लोकहित के लिए प्रयुक्त करना ही नागरिकता है।''
2. गैटेल (Gettel) के अनुसार, ''नागरिकता का अभिप्राय व्यक्ति के उस वैधानिक पद से है, जिसके आधार पर उसे अपने राजनीतिक समाज के सभी सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकार प्राप्त हों तथा उसके निर्धारित कर्तव्यों का पालन करता हो।
3. विलियम बायॅड (William Boyd) के अनुसार, ''नागरिकता अपनी निष्ठाओं को ठीक से निभाना है।''

प्रश्न 3: राज्यकृत (Naturalised) नागरिकता प्राप्त करने की विधियाँ बताओ।

उत्तरः राज्यकृत (Naturalised) नागरिकता निम्नलिखित विधियों द्वारा प्राप्त की जा सकती है–

1. **विवाह (Marriage)**:–यदि कोई महिला किसी विदेशी से शादी कर लेती है तो उसे अपने पति के देश की नागरिकता मिल जाती है, परन्तु जापान में विदेशी पुरुष को जापानी महिला से विवाह करने पर जापान की नागरिकता मिल जाती है। सभी देशों में यह नियम समान नहीं है।
2. **राज्य की सेवा(Government Service)**:–कुछ राज्यों में यह नियम है कि यदि कोई विदेशी सरकारी सेवा में लिया जाता है तो उसे राज्य की नागरिकता प्राप्त हो जाती है।
3. **सम्पत्ति खरीदने पर(Purchase of Property)**:–पीरू (Peru) तथा मैक्सिको (Mexico) जैसे दक्षिणी अमेरिकी देशों में यह नियम है कि यदि कोई विदेशी वहाँ अचल सम्पत्ति खरीद लेता है तो उसे वहाँ की नागरिकता प्रदान कर दी जाती है।

4. **सेना में भर्ती होना(Military Service)**:–कुछ देशों में यह भी नियम है कि यदि कोई व्यक्ति किसी विदेशी सेना में भर्ती हो जाता है तथा उस देश के प्रति वफादारी की शपथ लेता है, तो वह वहाँ का नागरिक बन जाता है।

प्रश्न 4: नागरिकता(Chitizenship) कैसे खोई जाती है?

उत्तरः प्रत्येक देश में नागरिकता के छिन जाने के लिए भिन्न–भिन्न नियम होते हैं। निम्नलिखित किसी कारण से एक नागरिक अपनी नागरिकता को खो सकता है–

1. **विवाह द्वारा (By Marriage)**: विवाह से नागरिकता खो जाती है। जब कोई स्त्री किसी विदेशी से विवाह कर लेती है तो उसे अपने पति के देश की नागरिकता प्राप्त हो जाती है और वह अपनी नागरिकता खो देती है।
2. **लम्बी अनुपस्थिति के कारण (Long Absence)**: यदि कोई नागरिक बहुत वर्षों तक अपने देश से अनुपस्थित रहता है और विदेशी सरकार की नौकरी करता है या कोई विदेशी पद ग्रहण कर लेता है तो उसकी अपने देश की नागरिकता खो जाती है।
3. **राज्य के कानून द्वारा (Law of the State)**: सेना से भागे हुए सिपाही, देश–द्रोही तथा पुराने अपराधियों से भी नागरिकता राज्य के कानून द्वारा छीन ली जाती है।
4. **स्वेच्छा द्वारा (Voluntary)**: वह स्वेच्छा से अपनी नागरिकता को त्याग सकता है।

प्रश्न 5: आदर्श नागरिक के गुणों का उल्लेख करें।

उत्तरः आदर्श नागरिक के गुणों का उल्लेख निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता हैः–

1. **उत्तम स्वास्थ्य (Good Health)**: एक आदर्श नागरिक अपना स्वास्थ्य अच्छा बनाए रखता है। स्वस्थ नागरिक ही अपने कर्तव्यों का दृढ़ता से पालन कर सकता है।
2. **अच्छी शिक्षा (Good Education)**: प्रजातन्त्र में एक नागरिक अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों को उचित ढंग से तभी निभा सकता है, यदि वह शिक्षित हो।
3. **उदार तथा उच्च विचार (Liberal Ideas)**: आदर्श नागरिक के विचार भी उच्च तथा उदारवादी होते हैं। वह संकीर्ण तथा तुच्छ विचारों से दूर रहता है।
4. **प्रगतिशील दृष्टिकोण (Progressive Attitude)**: अच्छे नागरिक का दृष्टिकोण भी प्रगतिशील होना चाहिए। जात–पात तथा छुआछूत का प्रजातन्त्र में कोई स्थान नहीं है, इसलिए उन्हें समाप्त कर देना चाहिए।
5. **जन–सेवा की भावना** (Social Service): उत्तम नागरिक में समाज–सेवा की भावना कूट–कूटकर भरी रहती है। समाज में जो लोग पिछड़े, गरीब, अनपढ़ तथा शोषित है, उनकी सेवा करना सुयोग्य नागरिक का कर्तव्य है।

प्रश्न 6: नागरिक के दो प्रकारों अथवा रूपों (Kinds) का वर्णन कीजिए।

उत्तरः नागरिक के दो प्रकारों का वर्णन इस प्रकार हैः–

1. **जन्मजात नागरिक (By Birth Citizen):** जन्मजात नागरिक वे होते हैं जो जन्म से ही अपने देश के नागरिक होते हैं।
2. **राज्यकृत नागरिक (Naturalised Citizen)**: राज्यकृत नागरिक वे होते हैं जो जन्म से ही किसी अन्य देश के नागरिक होते हैं, परन्तु किसी अन्य देश की कानूनी शर्तें पूरी करने के बाद उस देश की नागरिकता प्राप्त कर लेते हैं।

प्रश्न 7: नागरिकता का रक्त सिद्धान्त (Kinship) क्या है?

उत्तरः इस सिद्धान्त के अनुसार बच्चे को अपने माता–पिता के देश की नागरिकता रक्त (Kinship) द्वारा प्राप्त होती है। चाहे बच्चे का जन्म स्थान विदेश भी क्यों न हो, उसे अपने पैतृक देश की ही नागरिकता मिल जाती है। एक भारतीय दम्पत्ति का बच्चा चाहे देश में पैदा हुआ हो या विदेश में पर्यटन करते हुए, वह भारत का ही नागरिक कहलाएगा।

प्रश्न 8: नागरिकता का जन्म–स्थान (Place of Birth) का सिद्धान्त क्या है?

उत्तरः इस सिद्धान्त के अनुसार नागरिकता का आधार वंश न होकर जन्म स्थान होता है। इसके अन्तर्गत विदेशियों के बच्चे अन्य राज्यों में पैदा हो तो वे उस राज्य के नागरिक बन सकते हैं। इंग्लैड़ में नियम है कि उसकी सीमा में ही नहीं वरन् उसके किसी जहाज में भी यदि कोई बच्चा जन्म लेता है तो वह इंग्लैड़ का नागरिक कहलाएगा।

प्रश्न 9: नागरिकता का दोहरा (Double Chitizenship) या मिश्रित सिद्धान्त क्या है?

उत्तरः रक्त वंश तथा जन्म स्थान के कारण उत्पन्न हुई समस्या के समाधान के लिए कुछ देशों में इन दोनों नियमों को माना जाता है। इसलिए इसे दोहरा नियम कहा जाता है। इसके अनुसार किसी देश के नागरिकों की सन्तानें विदेशों में भी पैदा हो तो भी वे स्वदेश की नागरिकता प्राप्त कर सकती है और विदेशी नागरिकों की संतानें अगर उसकी सीमा में पैदा होंगी व उन्हें भी उस देश की नागरिकता प्राप्त हो सकती है। इंग्लैण्ड, अमेरिका, भारत, रूस, फ्रांस आदि देशों में दोहरा नियम–पालन किया जाता है। एक बच्चे को व्यस्क (Adult) हो जाने पर स्वेच्छा से कोई एक नागरिकता का त्याग करना होता है।

प्रश्न 10:नागरिकता की विशेषताओं(Characteristics of Citizenship) का उल्लेख करो।

उत्तरः नागरिकता की विशेषताओं का उल्लेख निम्नलिखित हैः–

1. **राज्य की सदस्यता (Membnership of a State)**: नागरिकता की प्रथम विशेषता राज्य की सदस्यता है। नागरिक को राज्य की स्थायी सदस्यता प्राप्त होती है।
2. **सर्व व्यापकता (Comprehensive)**: नागरिकता की दूसरी विशेषता इसकी सर्वव्यापकता में हैं अर्थात् नागरिकता राज्य में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के आधार पर प्राप्त होती है।
3. **अधिकारों का प्रयोग (Grant of Fundfamental Rights)**: नागरिकता सभी व्यक्तियों को अधिकार प्रदान करवाती है, जिन्हें प्राप्त करके नागरिक अपने जीवन में विकास व उन्नति कर सकते हैं।
4. **कर्तव्य परायणता (Duty)**: नागरिकता व्यक्तियों में कर्तव्य परायणता की भावना को जगाती है।
5. **देश–भक्ति की भावना** (Patriotism): नागरिकता में देश–भक्ति की भावना निहित है, जिसके दम पर राष्ट्र का अस्तित्व निर्भर करता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: "नागरिकता वह व्यक्ति है जिसे किसी राज्य के शासन तथा न्याय प्रबंध में भाग लेने का अधिकार है।" नागरिक की यह परिभाषा निम्नलिखित में से किस विद्वान ने दी है?

(क) अरस्तु (ख) लॉस्की

(ग) गैटेल (घ) बोसांके

प्रश्न 2: ''नागरिकता व्यक्ति की उस अवस्था को कहते हैं जिसके कारण वह अपने राज्य में राष्ट्रीय तथा राजनीतिक अधिकारों का प्रयोग कर सकता है और कर्तव्य का पालन करने के लिए तैयार रहता है।'' नागरिकता की यह परिभाषा निम्नलिखित में से कि विद्वान ने दी?

(क) गैटेल (ख) लॉस्की

(ग) अरस्तु (घ) बायड

प्रश्न 3: नागरिकता प्राप्त करने का आधार है–

(क) उस देश में व्यापार करना

(ख) उस देश के किसी विश्वविद्यालय में दाखिला लेना

(ग) उस देश के किसी नागरिक से विवाह करना

(घ) उस देश में सैर करने के लिए जाना

प्रश्न 4: निम्नलिखित में से कौन–सी नागरिक की विशेषता नहीं है–

(क) राज्य की सदस्यता (ख) अधिकारों की प्राप्ति

(ग) राज्य के प्रति वफादारी (घ) अस्थायी निवासी

प्रश्न 5: नागरिक को निम्नलिखित अधिकार प्राप्त होते हैं –

(क) सामाजिक अधिकार

(ख) राजनीतिक अधिकार

(ग) आर्थिक अधिकार

(घ) उपर्युक्त तीनों प्रकार के अधिकार

प्रश्न 6: भारतीय नागरिकता के संबंध में कानून संसद द्वारा निम्नलिखित वर्ष में पास किया गया था –

(क) 1948 (ख) 1951

(ग) 1957 (घ) 1955

प्रश्न 7: किसी राज्य का नागरिक वह व्यक्ति है जिसको उस राज्य के विधान–कार्य तथा न्याय–प्रशासन में भाग लेने का पूर्ण अधिकार है।'' यह शब्द किस विद्वान के हैं।

(क) लॉस्की (ख) अरस्तु

(ग) वाटाल (घ) गैटेल

प्रश्न 8: नागरिकता के उदारवादी सिद्धान्त का समर्थक कौन है?

(क) राबर्ट नाजिक (ख) लॉस्की

(ग) एंथनी गिडेन्स (घ) टी०एच० मार्शल

उत्तरः (1) क, (2) घ, (3) ग, (4) घ, (5) घ, (6) घ, (7) ख, (8) घ।

अधिकार

(Rights)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: अधिकारों का अर्थ एवं उनकी परिभाषा दीजिए।

उत्तर: मनुष्यों को अपना विकास करने के लिए कुछ सुविधाओं की आवश्यकता होती है। मनुष्य को जो सुविधाएँ समाज में मिली होती है, उन्हीं सुविधाओं को अधिकार कहते हैं। साधारण शब्दों में अधिकार से अभिप्राय असुविधाओं और अवसरों से है जो मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है और उन्हें समाज में मान्यता प्राप्त है।

1. लॉस्की (Laski) के शब्दों में, ''अधिकार सामाजिक जीवन की वे अवस्थाएँ हैं जिनके बिना कोई भी व्यकित अपने जीवन का विकास नहीं कर सकता।''
2. बोसांके (Bosanquet) के अनुसार, ''अधिकार वह मांग है जिसे समाज मान्यता देता है और राज्य लागू करता है।''
3. ग्रीन (Green) के अनुसार, ''अधिकार व्यक्ति के नैतिक विकास के लिए आवश्यक बाहरी अवस्थाएँ हैं।''

प्रश्न 2: नागरिक जीवन में अधिकारों का क्या महत्व हैं?

उत्तर: मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के लिए तथा समाज की प्रगति के लिए अधिकारों का होना अनिवार्य है। नागरिक जीवन में अधिकारों का महत्व निम्नलिखित हैः–

1. **व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास (To develop one's personality)**: जिस प्रकार एक पौधे के विकास के लिए धूप, पानी, मिट्टी, हवा की जरूरत होती है, उसी तरह व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए अधिकारों की अत्यधिक आवश्यकता है।
2. **समाज के विकास के साधन (To Develop Society):** व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। यदि अधिकारों की प्राप्ति से व्यक्तित्व का विकास हो सकता है तो सामाजिक विकास भी स्वयंमेव हो जाता है।
3. **समाज की आधारशिला (Foundation Stone):** अधिकारों की व्यवस्था के बिना समाज का जीवित रहना संभव नहीं है, अधिकार ही मनुष्य द्वारा परस्पर व्यवहार से सुव्यवस्थित समाज की आधारशिला का निर्माण करते हैं।
4. **कल्याणकारी राज्य की स्थापना में सहायक (To assist in Welfare Functions):** प्रत्येक राज्य की सफलता उसके नागरिकों पर निर्भर करती है। जिस राज्य के नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकत नहीं होंगे और अपने कर्तव्यों का सही तरह पालन नहीं करेंगे, उस राज्य की योजनाएँ असफल होंगी।

प्रश्न 3: अधिकारों की मुख्य विशेषताएँ(Characteristics) बताइये।

उत्तर: अधिकारों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैंः–

1. **समाज में ही संभव (Possibile in Society)**:–अधिकार केवल समाज में ही प्राप्त होते हैं। समाज के बाहर अधिकारों का न कोई अस्तित्व है और न कोई आवश्यकता।
2. **समाज द्वारा मान्य(Recognized by the Society)**:–अधिकार व्यक्ति की मांग है जिसे समाज मान ले या स्वीकार कर ले।

3. **असीमित नहीं होते(Not unlimited)**:–प्रत्येक अधिकार पर किसी न किसी प्रकार के प्रतिबंध अवश्य होते हैं। कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखने के लिए अधिकारों को सीमित करना अनिवार्य है।

4. **व्यक्ति का दावा है(Rights are Individual Demands)**:–अधिकार व्यक्ति का किसी कार्य को करने का दावा है जो वह समाज में करता है।

5. **सर्वव्यापक (Comprehensive)**: अधिकार समाज के सभी व्यक्तियों को समान रूप से प्राप्त होते हैं।

प्रश्न 4: नागरिक(Civil) या सामाजिक(Social Rights) अधिकार किसे कहते हैं? किन्हीं तीन प्रकार के नागरिक अधिकारों का वर्णन करें।

उत्तर: नागरिक या सामाजिक अधिकार राज्य के सभी नागरिकों को समान रूप से प्राप्त होते हैं। आधुनिक लोकतन्त्रीय राज्य में नागरिक को निम्नलिखित सामाजिक अधिकार प्राप्त होते हैं –

1. **जीवन का अधिकार (Rights to Life)**: जीवन का अधिकार सबसे महत्वपूर्ण अधिकार है। इसके बिना अन्य अधिकार व्यर्थ है। जिस मनुष्य का जीवन ही सुरक्षित नहीं है, वह उन्नति नहीं कर सकता। नागरिकों के जीवन की रक्षा करना राज्य का परम कर्तव्य है।

2. **शिक्षा का अधिकार (Right to Education)**: शिक्षा के बिना मनुष्य अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकता। अनपढ़ व्यक्ति को गंवार तथा पशु समान समझा जाता है। शिक्षा के बिना मनुष्य को अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों का ज्ञसन नहीं होता।

3. **सम्पत्ति का अधिकार (Right to Property)**: सम्पत्ति का अधिकार व्यक्ति के जीवन के लिए बहुत आवश्यक है।

प्रश्न 5: आर्थिक अधिकारों (Economic Rights) से आप क्या समझते हैं? कोई पाँच आर्थिक अधिकार लिखो।

उत्तर: आर्थिक अधिकार वे अधिकार हैं जो मनुष्य के विकास के लिए आवश्यक है। नागरिकों को निम्नलिखित आर्थिक अधिकार प्राप्त होते हैं:–

1. **काम का अधिकार(Right to Work)**: कई राज्यों में नागरिकों को काम का अधिकार प्राप्त होता है। राज्य का कर्तव्य है कि वह नागरिकों को काम दे ताकि वह अपनी आजीविका कमा सके।

2. **उचित मजदूरी का अधिकार(Right to Wages)**: किसी नागरिक को काम देना ही पर्याप्त नहीं है उसे उसके काम की उचित मजदूरी भी मिलनी चाहिए।

3. **अवकाश पाने का अधिकार(Right to Rest)**: मजदूरों को काम करने के पश्चात् अवकाश भी मिलना चाहिए। अवकाश वेतन सहित होना चाहिए।

4. **काम के नियमित समय का अधिकार(Right to fixed working hour)**: आधुनिक राज्यों में काम करने के घंटे भी निश्चित होने चाहिए ताकि पूंजीपति मजदूरों का शोषण न कर सके।

5. **आर्थिक सुरक्षा का अधिकार(Right to Economic Security)**: नागरिक को आर्थिक सुरक्षा के अधिकार प्राप्त होते हैं। इस अधिकार के अन्तर्गत यदि कोई व्यक्ति काम करते समय अंगहीन या अंधा हो जाता है, तो सरकार उसको आर्थिक सहायता प्रदान करती है।

प्रश्न 6: व्यक्ति को प्राप्त किन्हीं पाँच अधिकारों(Rights) का वर्णन कीजिए।

उत्तर: **1. जीवन का अधिकार (Right to Life):** जीवन आ अधिकार सबसे महत्पपूर्ण अधिकार है। अपने जीवन की रक्षा करना नागरिकों का महत्वपूर्ण अधिकार है।

2. **काम का अधिकार (Right to Work)**: प्रत्येक नागरिक को अपनी योग्यता तथा शक्ति के अनुसार नौकरी प्राप्त करने का तथा व्यवसाय करने का पूरा–पूरा अधिकार होता है। राज्य का कर्तव्य है कि वह सभी नागरिकों को काम दें।

3. **समानता का अधिकार (Right to Equality)**: सभी नागरिकों को समानता का अधिकार दिया जाता है। धर्म, जाति, रंग, लिंग आदि के आधार पर नागरिकों में भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

4. **राजनीतिक अधिकार (Political Right)**: राजनीतिक अधिकार के द्वारा नागरिक शासन में भाग लेता है। इसमें मत देने, चुनाव लड़ने, सरकारी पद प्राप्त करने आदि के अधिकार शामिल है।

5. **धर्म की स्वतन्त्रता का अधिकार (Right to Religious Freedom)**: धर्म की स्वतन्त्रता का अर्थ है कि मनुष्य को स्वतन्त्रता है कि वह जिस धर्म में चाहे विश्वास रखे, जिस देवता की चाहे पूजा करे और जिस तरह चाहे पूजा करे। सरकार को नागरिकों के धर्म में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 7: राजनीति अधिकार (Political Rights) क्या होते हैं? किन्हीं चार राजनीतिक अधिकारों का वर्णन करो।

उत्तर: राजनीतिक अधिकार वे अधिकार होते हैं जिनके द्वारा नागरिक शासन में भाग ले सकते हैं। आधुनिक लोकतान्त्रिक राज्यों में नागरिकों को निम्नलिखित राजनीतिक अधिकार प्राप्त होते हैं–

1. **मतदान का अधिकार (Right to Vote)**: लोकतन्त्र में जनता का शासन होता है, परन्तु शासन जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाता है। नागरिक को अपनी इच्छानुसार मताधिकार का अधिकार है।

2. **चुनाव लड़ने का अधिकार (Right to Contest Elections)**: लोकतान्त्रिक राज्यों में नागरिकों को चुनाव लड़ने का अधिकार भी होता है। चुनाव लड़ने के लिए एक न्यूनतम निश्चित आयु होती है।

3. **सरकारी पद प्राप्त करने का अधिकार (Right to hold Public Office)**: लोकतान्त्रिक राज्यों में नागरिकों को उच्च सरकारी पद प्राप्त करने का अधिकार है। किसी भी नागरिक के साथ धर्म, जाति, वंश, लिंग इत्यादि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।

4. **आलोचना का अधिकार** (Right to Criticism): लोकतन्त्र में नागरिकों को सरकार की आलोचना करने का अधिकार प्राप्त होता है।

प्रश्न 8: अधिकारों के प्राकृतिक सिद्धान्त(Natural Theory of Rights) पर संक्षिप्त लेख लिखें।

उत्तर: इस सिद्धान्त के अनुसार अधिकार प्रकृति की देन है, समाज की नहीं। व्यक्ति को अधिकार जन्म से प्राप्त होते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार अधिकार राज्य तथा समाज बनने से पूर्व के हैं। इस सिद्धान्त के समर्थक हॉब्स (Hobbes), लॉक (Locke), तथा रूसो (Rousseau) थे।

मिल्टन (Milton), वाल्टेयर (Voltair), थॉमस पैन (Thomas Pane), ब्लैक स्टोन (Black Stone) जैसे विद्वानों ने भी प्राकृतिक अधिकारों (Natural Rights) के सिद्धान्त का समर्थन किया। अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा (1796) में यह स्पष्ट कहा गया कि सभी मनुष्य जन्म से स्वतन्त्र तथा समान है और इन अधिकारों को राज्य नहीं छीन सकता। फ्रांस की क्रान्ति (1789) में भी प्राकृतिक अधिकारों का बोलबाला रहा।

प्रश्न 9: प्राकृतिक अधिकारों(Natural Rights) के सिद्धान्त की किन आधारों पर आलोचना की जाती है?

उत्तर: प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धान्त कर निम्नलिखित आधारों पर कड़ी आलोचना की गई है–

1. **'प्रकृति' (Nature)तथा 'प्राकृतिक' (Natural) शब्दों का अर्थ स्पष्ट नहीं (The words "Nature" and "Natural" are unclear)**: इस सिद्धान्त की आलोचना इसलिए की जाती है कि इस सिद्धान्त में प्रयुक्त 'प्रकृति' तथा 'प्राकृतिक' शब्दों का अर्थ स्पष्ट नहीं है।

2. **प्राकृतिक अधिकारों की सूची पर मतभेद** (No Compromise in the list of Natural Rights): प्राकृतिक शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में होने के कारण इस सिद्धान्त के समर्थन अधिकारों की सूची पर भी सहमत नहीं होते।

3. **प्राकृतिक अवस्था में अधिकार प्राप्त नहीं हो सकते (No rights are possioble in state of nature)**: प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य को अधिकार प्राप्त नहीं हो सकते। अधिकार तो केवल समाज में ही प्राप्त होते हैं, न कि प्राकृतिक अवस्था (State of Nature) में।

4. **प्राकृतिक अधिकार असीमित है जो कि गलत है** (Natural Rights are not unlimited): प्राकृतिक अधिकार असीमित है और इन अधिकारों पर कोई नियन्त्रण नहीं है जो कि गलत है समाज में मनुष्य को कभी भी असीमित अधिकार प्राप्त नहीं हो सकते।

5. **अधिकार परिवर्तनशील** (Rights are Changeable): प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धान्त के अनुसार अधिकार निश्चित है जो सर्वथा गलत है। ये परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं।

प्रश्न 10: अधिकारों के ऐतिहासिक सिद्धान्त(Historical Theory of Rights) पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

उत्तर: अधिकारों के ऐतिहासिक सिद्धान्त (Historical Theory of Rights) के अनुसार अधिकारों का जन्म इतिहास में हुआ है। अधिकारों का जन्म उन रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं से होता है जो काफी समय से चली आ रही होती है और जिन्हें उपयोगी समझा जाता है। रिचि (Ritchie) के मतानुसार, ''जिन अधिकारों के बारे में लोग यह सोचते हैं कि उन्हें मिलने चाहिए ये वे अधिकार होते हैं जिनके वे आदी (habitual) होते हैं या जिनके विषय में गलत या सही एक परम्परा (convention) चली आती है कि वे उन्हें कभी प्राप्त थे।''

इस सिद्धान्त के अनुसार, अधिकार रीति–रिवाजों पर आधारित होते हैं और उन्हें इतिहास मान्यता दे चुका होता है। सम्पत्ति का अधिकार, रीति–रिवाजों पर आधारित है जिसे समाज स्वीकृति दे चुका है। इंग्लैण्ड में नागरिकों के अधिकार, मुख्यतः परम्पराओं तथा रीति–रिवाजों पर आधारित है। बर्क (Burke) के मतानुसार, ''इंग्लैण्ड की शानदार क्रान्ति (Glarrious Revolution) लोगों के परम्परागत अधिकारों पर आधारित थी।''

प्रश्न 11:अधिकारों के कानूनी (Legal Theory of Rights) की व्याख्या करो।

उत्तर: अधिकारों के कानूनी सिद्धान्त का समर्थन बैन्थम (Bentham), आस्टिन (Austin), हालैंड (Halland) तथा आमंड (Almod) ने किया है। इस सिद्धान्त के अनुसार अधिकार राज्य की देन है अधिकारों की प्राप्ति मनुष्य को जन्म से नहीं होती, बल्कि राज्य, मनुष्य को अधिकार देता है। मनुष्य के अधिकार वही है जो राज्य में उसको दिए है अथवा संविधान में जो लिखे हुए हैं। व्यक्ति को राज्य के विरूद्ध कोई अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता है। व्यक्ति के अधिकार असीमित न होकर सीमित है। जिन अधिकारों को राज्य मान्यता नहीं देता वे व्यर्थ है। कानूनी अधिकारों के सिद्धान्त में निम्नलिखित बातें निहित है:–

1. अधिकार राज्य को देन है राज्य से पूर्व ये अधिकार नहीं थे। (Rights are granted by State)
2. अधिकार राज्य द्वारा लागू किए जाते हैं। (Rights are implimentedf by the state)
3. व्यक्ति को राज्य के विरूद्ध कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। (No rights against the state)

प्रश्न 5: 'अधिकार उन सामाजिक संस्थाओं का नाम है, जिनके बिना कोई व्यक्ति पूर्ण रूप से विकास नहीं कर सकता' यह कथन किसका है?

(क) हालैंड (ख) ऑस्टिन

(ग) लॉस्की (घ) बोसांके

प्रश्न 6: अधिकार की यह परिभाषा, विशेष कार्य करने में स्वतन्त्रता की उचित मांग ही अधिकार है' – किसने दी है?

(क) वाइल्ड (ख) बोसांके

(ग) हालैंड (घ) लॉस्की

प्रश्न 7: जीवन का अधिकार

(क) आर्थिक अधिकार है (ख) सामाजिक अधिकार है

(ग) नैतिक अधिकार है (घ) धार्मिक अधिकार है

प्रश्न 8: प्राकृतिक अधिकार से अभिप्राय

(क) उन अधिकारों से है जो व्यक्ति की नैतिक भावनाओं पर आधारित होते हैं।

(ख) उन अधिकारों से है जो व्यक्ति को प्रकृति ने दिये हैं।

(ग) उन अधिकारों से है जो व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक है।

(घ) उन अधिकारों से है जो राज्य की ओर से प्राप्त होते हैं।

प्रश्न 9: प्राकृतिक अधिकार का समर्थन '

(क) अरस्तु ने किया (ख) कार्ल मार्क्स ने किया

(ग) हॉब्स, लॉक तथा रूसो ने किया (घ) ग्रीन ने किया

प्रश्न 10: सरकारी पद प्राप्त करने का अधिकार

(क) राजनीति अधिकार है (ख) सामाजिक अधिकार है

(ग) आर्थिक अधिकार है (घ) नैतिक अधिकार है

प्रश्न 11: यह किसने कहा – केवल कर्तव्यों के संसार में ही अधिकारों का महत्व होता है।''

(क) वाइल्ड (ख) ग्रीन

(ग) बोसांके (घ) गार्नर

प्रश्न 12: निम्नलिखित में से कौन–सा एक राजनीतिक अधिकार है –

(क) मतदान का (ख) जीवन का

(ग) काम का (घ) सम्पत्ति का

प्रश्न 13: कानूनी अधिकारों का समर्थक है –

(क) हॉब्स (ख) लॉक

(ग) रूसो (घ) बैन्थम

प्रश्न 14: अधिकारों के सामाजिक कल्याण का समर्थक है –

(क) हॉब्स (ख) ग्रीन

(ग) जे०एस० मिल (घ) रूसो

प्रश्न 15: अधिकारों के आदर्शवादी सिद्धान्त का समर्थक है –

(क) टी०एच० ग्रीन (ख) गार्नर

(ग) लॉस्की (घ) रूसो

प्रश्न 16: निम्नलिखित प्राकृतिक अधिकार नहीं है –

(क) शिक्षा का अधिकार (ख) जीवन का अधिकार

(ग) स्वतन्त्रता का अधिकार (घ) सम्पत्ति का अधिकार

प्रश्न 17: अधिकारों के आदर्शवादी सिद्धान्त का समर्थक है –

(क) लॉक (ख) बार्कर

(ग) ग्रीन (घ) लॉस्की

प्रश्न 18: काम का अधिकार –

(क) नागरिक अधिकार है (ख) राजनीतिक अधिकार है

(ग) मौलिक अधिकार है (घ) आर्थिक अधिकार है

प्रश्न 19: वोट डालने का अधिकार –

(क) राजनीतिक अधिकार (ख) आर्थिक अधिकार

(ग) सामाजिक अधिकार (घ) नैतिक अधिकार

प्रश्न 20: प्राकृतिक अधिकारों का समर्थन किस विद्वान ने किया?

(क) प्लेटो (ख) अरस्तु

(ग) लॉक (घ) मार्क्स

प्रश्न 21: निम्नलिखित में से कौन–सा राजनीतिक अधिकार है?

(क) परिवार का अधिकार (ख) शिक्षा का अधिकार

(ग) सम्पत्ति का अधिकार (घ) चुनाव लड़ने का अधिकार

उत्तर: (1) क, (2) क, (3) ग, (4) क, (5) ग, (6) क, (7) ख, (8) ख, (9) ग, (10) क, (11) क, (12) क, (13) घ, (14) ग, (15) क, (16) क, (17) ख, (18) घ, (19) क, (20) ग, (21) घ।

स्वतन्त्रता

(Liberty)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: स्वतन्त्रता (Liberty) का अर्थ बताइए।

उत्तर: स्वतन्त्रता शब्द जिसे अंग्रेजी में 'लिबर्टी' (Liberty) कहते हैं, लेटिन भाषा के शब्द 'लिबर' (Liber) से निकला है, जिसका अर्थ पूर्ण स्वतन्त्रता अर्थात् किसी प्रकार के बन्धनों का न होना। इस प्रकार स्वतन्त्रता का अर्थ–व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कार्य करने की पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिए और उस पर किसी प्रकार के बन्धन नहीं होने चाहिए। परन्तु स्वतन्त्रता का यह अर्थ गलत है। स्वतन्त्रता का वास्तविक अर्थ यह है कि व्यक्ति पर अनुचित तथा अन्यायपूर्ण प्रतिबन्ध नहीं होने चाहिए और उसे उन अवसरों की भी प्राप्ति होनी चाहिए जिनसे उसे अपना विकास करने में सहायता मिलती है।

1. लॉस्की (Laski) के शब्दों में, ''स्वतन्त्रता का अर्थ उस वातावरण की उत्साहपूर्ण रक्षा करना है जिससे मनुष्य को अपने जीवन के विकास के सर्वोत्तम अवसर मिल सके।''
2. कोल (Cole) के अनुसार, ''बिना किसी बाधा के अपने व्यक्तित्व को प्रकट करने का नाम स्वतन्त्रता है।''
3. गैटल (Gettel) के अनुसार, ''स्वतन्त्रता से अभिप्राय इस सकारात्मक शक्ति से है जिससे उन बातों को करके आनन्द प्राप्त होता है जो करने योग्य है।''

स्वतन्त्रता की ऊपर दी गई परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि:–

(i) स्वतन्त्रता का अर्थ ऐसी परिस्थितियों तथा अवसरों की स्थापना है जिसमें मनुष्य अपने जीवन का पूर्ण विकास कर सके।
(ii) स्वतन्त्रता का अर्थ सभी प्रकार के बन्धनों का अभाव नहीं बल्कि उन बन्धनों का अभाव है जो अनुचित हो।
(iii) स्वतन्त्रता उन करने योग्य कार्यों को करने तथा उपभोग करने योग्य वस्तुओं को उपभोग करने का अधिकार है।

प्रश्न 2: स्वतन्त्रता के नकारात्मक (Negative)तथा सकारात्मक (Positive) रूपों (Kinds) का अर्थ बताइए।

उत्तर: स्वतन्त्रता (Negative) स्वतन्त्रता का अर्थ है – व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार किसी भी कार्य को करने की स्वतन्त्रता होना और उस पर किसी भी प्रकार के बन्धनों का न होना, परन्तु स्वतन्त्रता का यह सही अर्थ नहीं है। यदि व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न हो तो समाज में अराजकता फेल जाएगी और 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' (Might is Right) समाज के जीवन का आधार बन जाएगा। स्वतन्त्रता के सकारात्मक (Positive) पक्ष से अभिप्राय यह है कि व्यक्ति को वह सब कुछ करने की स्वतन्त्रता है जो करने योग्य होता है। स्वतन्त्रता के इस पक्ष का अर्थ प्रत्येक प्रकार के प्रतिबन्धों का अभाव नहीं। स्वतन्त्रता का अभिप्राय एक ऐसा वातावरण स्थापित करना है जिसमें मनुष्य को अपना सर्वोत्तम करने के लिए उपयुक्त अवसर प्राप्त हो।

प्रश्न 3: स्वतन्त्रता के कोई पाँच रूपों(Kinds) का वर्णन करें।

उत्तर: स्वतन्त्रता के पाँच प्रकार (Kinds) निम्नलिखित हैं:–

1. **प्राकृतिक स्वतन्त्रता (Natural Liberty)**:–प्राकृतिक स्वतन्त्रता से अभिप्राय यह है कि राज्य की उत्पत्ति से पूर्व की स्वतन्त्रता। इस स्वतन्त्रता में व्यक्ति पर किसी प्रकार के प्रतिबन्ध नहीं थे। व्यक्ति स्वेच्छानुसार जीवन व्यतीत करते थे।

2. **राजनीतिक स्वतन्त्रता (Political Liberty)**:–राजनीतिक स्वतन्त्रता में लोगों को विभिन्न प्रकार के राजनीतिक अधिकार प्राप्त होते हैं। प्रजातन्त्र की सफलता के लिए राजनीतिक स्वतन्त्रता अत्यन्त आवश्यक है।

3. **नैतिक स्वतन्त्रता (Moral Liberty)**:–नैतिक स्वतन्त्रता का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी बुद्धि विवेक के अनुसार अन्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व को सम्मान प्रदान करते हुए निर्णय लने सके और कार्य कर सके।

4. **राष्ट्रीय स्वतन्त्रता (National Liberty)**:–राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का अर्थ है – विदेशी नियंत्रण से स्वतन्त्रता।

5. **आर्थिक स्वतन्त्रता (Economic Liberty)**: आर्थिक स्वतन्त्रता का अर्थ शोषण के अभाव से है। नागरिक भूख और बेरोजगारी से मुक्त होने चाहिए तथा नागरिकों को उन्नति के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए।

प्रश्न 4: आर्थिक स्वतन्त्रता (Economic Liberty) तथा राजनीतिक स्वतन्त्रता (Political Liberty) के संबंधों का वर्णन करो।

उत्तरः आर्थिक स्वतन्त्रता (Economic Liberty) का अर्थ है – भूख और अभाव से मुक्ति। राजनीतिक स्वतन्त्रता (Political Liberty) का अर्थ है – मत डालने, चुनाव, सार्वजनिक पद प्राप्त करने और सरकार की आलोचना करने की स्वतन्त्रता। राजनीतिक स्वतन्त्रता तथा आर्थिक स्वतन्त्रता में घनिष्ठ संबंध है। जहाँ आर्थिक स्वतन्त्रता नहीं वहाँ राजनीतिक स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं है। एक भूखे व्यक्ति के लिए मताधिकार (Votting) का भी कोई मूल्य नहीं। गरीबी के कारण लोग अपना वोट बेच देते हैं और धनवान व्यक्ति उन्हें खरीद लेते हैं। यह भी सत्य है कि जिस व्यक्ति का धन पर नियंत्रण है, उसका प्रशासन पर भी प्रभाव जम जाता है।

प्रश्न 5: आधुनिक राज्य में स्वतन्त्रता किस प्रकार सुरक्षित(Safe guards of Liberty) रखी जा सकती है?

उत्तरः स्वतन्त्रता की सुरक्षा के विभिन्न उपायों में से पाँच उपाय निम्नलिखित हैं:–

1. **प्रजातन्त्र (Democracy)**: प्रजातन्त्रीय शासन प्रणाली में जनता की सरकार होती है और लोगों के अधिकारों को छीना नहीं जा सकता।

2. **मौलिक अधिकारों की घोषणा (Declaration of Fundamental Rights)**: जनता को स्वतन्त्रता प्रदान करने के लिए लोगों के मौलिक अधिकारों की घोषणा कर उन्हें संविधान (Contitution) में लिख दिया जाता है, ताकि संविधान द्वारा लोगों की स्वतन्त्रता की सुरक्षा हो सके।

3. **स्वतन्त्र प्रेस (Independent Press)**: स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष प्रेस भी लोगों की स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने में सहायता करती है। स्वतन्त्रा व निष्पान प्रेस की सरकार की आलोचना करके सत्ता पर नियन्त्रण बनाए रखती है।

4. **कानून का शासन (Rule of Law)**: कानून का शासन स्वतन्त्रता की सुरक्षा करता है। कानून के सामने सब सामने होने चाहिए और सभी लोगों के लिए एक–सा कानून होना चाहिए।

5. **स्वतन्त्र न्यायपालिका (Independent Judiciary)**: कानूनों को लागू करने के लिए न्यायाधीश स्वतन्त्र निडर और ईमानदार होने चाहिए।

प्रश्न 6: ''सतत् जागरूकता ही स्वतन्त्रता की कीमत है।''(Eteral vigilance is the price of liberty) टिप्पणी कीजिए।

उत्तरः लास्की (Laski) ने ठीक ही कहा है, ''सतत् जागरूकता ही स्वतन्त्रता की कीमत है।'' स्वतन्त्रता की सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उपाय स्वतन्त्रता के प्रति जागरूक रहना है। लॉस्की (Laski) के शब्दों में, ''नागरिकों की महान् भावना, न कि कानूनी शब्दावली स्वतन्त्रता की वास्तविक संरक्षक है।''

प्रश्न 7: प्राकृतिक स्वतन्त्रता (Natural Liberty) से आप क्या समझते हैं?

उत्तरः **प्राकृतिक स्वतन्त्रता (Natural Liberty)**: प्राकृतिक स्वतन्त्रता का ठीक–ठीक अर्थ क्या है, यह कहना कठिन है। रूसो के कथनानुसार, ''मनुष्य स्वतन्त्र उत्पन्न होता है किन्तु प्रत्येक स्थान पर वह बन्धन में क्या होता है।''

इसका अर्थ है कि प्रकृति ने व्यक्ति को स्वतन्त्र पैदा किया है। इस मत से अधिकांश विचारक सहमत नहीं है। प्राकृतिक स्वतन्त्रता केवल जंगल की स्वतन्त्रता है जो वास्तव में स्वतन्त्रता है ही नहीं। सच्चे अर्थ में तो स्वतन्त्रता केवल राजनीतिक दृष्टि से संगठित समाज में ही पाई जा सकती है।

प्रश्न 8: नागरिक स्वतन्त्रता(Civil Liberty) से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तरः **नागरिक स्वतन्त्रता (Civil Liberty)**: नागरिक स्वतन्त्रता प्राकृतिक स्वतन्त्रता से उलट है। जहाँ प्राकृतिक स्वतन्त्रता राज्य की स्थापना से पहले मानी जाती है वहाँ नागरिक स्वतन्त्रता राज्य के द्वारा सुरक्षित मानी जाती है। गैटेल (Gettel) के अनुसार, ''नागरिक स्वतन्त्रता में वे अधिकार और विशेषाधिकार शामिल है। जिन्हें राज्य अपनी प्रजा के लिए बनाता और सुरक्षित रखता है। इसका मतलब यह है कि प्रत्येक (व्यक्ति) को कानून की सीमा के अन्दर अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने का अधिकार है। इसमें दूसरे लोगों के हस्तक्षेप से रक्षा करना या सरकार के हस्तक्षेप से रक्षा करना शामिल हो सकते हैं।'' इस प्रकार नागरिक स्वतन्त्रता उन अधिकारों के समूह का नाम है जो कानून के द्वारा मान लिए गए हों, और राज्य जिनको सुरक्षित रखता हो। कानून दो प्रकार के होते हैं –

(i) **सार्वजनिक (Public)**: सार्वजनिक कानून स्वतन्त्रता की सरकार के हस्तक्षेप से रक्षा करता है।

(ii) **व्यक्तिगत (Private)**: बार्कर (Barker) के अनुसार नागरिक स्वतन्त्रता तीन प्रकार की होती है –

(क) शारीरिक स्वतन्त्रता (Physical Liberty): शारीरिक स्वतन्त्रता में जीवन, स्वास्थ्य और घूमना–फिरना शामिल है।

(ख) मानसिक स्वतन्त्रता (Psychological Liberty): मानसिक स्वतन्त्रता में विचारों और विश्वासों को प्रकट करना आता है।

(ग) व्यावहारिक स्वतन्त्रता (Practical Liberty): व्यावहारिक स्वतन्त्रता में दूसरे व्यक्तियों के संबंधों और समझौते से संबंधित कार्यों में अपनी इच्छा आदि को शामिल करता है।

प्रजातन्त्र में नागरिक स्वतन्त्रता अधिक सुरक्षित होती है, जबकि स्वेच्छाचारी सरकार में इसकी अधिक सुरक्षा नहीं होती। लोकतन्त्र में भी व्यक्तियों पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिये जाते हैं, जिनसे नागरिक स्वतन्त्रताओं पर रोक लग जाती है, जैसे भारत के संविधान में विभिन्न स्वतन्त्रताएँ प्रदान की गई है। इसके साथ संविधान में ही निवारक नजरबन्दी कानून, भारत सुरक्षा अधिनियम, आन्तरिक सुरक्षा कानून, पोटा आदि समाज व राष्ट्र की सुरक्षा का बहाना लेकर नागरिक स्वतन्त्रताओं पर रोक लगा दी गई है।

प्रश्न 9: राजनीतिक स्वतन्त्रता (Political Liberty) का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः राजनीतिक स्वतन्त्रता (Political Liberty): राजनीतिक स्वतन्त्रता का अर्थ है कि व्यक्ति को जो राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं, उनका वह स्वतन्त्रता पूर्वक प्रयोग करे, वह कानून निर्माण तथा प्रशासन में भाग ले।

लॉस्की (Laski) ने ठीक कहा है कि राजनीतिक स्वतन्त्रता का अर्थ राज्य के कार्यों में सक्रिय भाग लेने की शक्ति से है। यह स्वतन्त्रता केवल लोकतन्त्र में ही संभव है, राजतन्त्र और तानाशाही में नहीं। प्रतिनिधियों को चुनने के लिए मतदान की स्वतन्त्रता, चुनाव लड़ने की स्वतन्त्रता, सार्वजनिक पद प्राप्त करने की स्वतन्त्रता, सरकार की आलोचना करने की स्वतन्त्रता। लीकॉक (Ledcocks) ने राजनीतिक स्वतन्त्रता से संवैधानिक स्वतन्त्रता (Constitutional Liberty) का नाम दिया है और कहा है कि जनता को अपनी सरकार स्वयं चुनने का अधिकार दिया जाना चाहिए।

प्रश्न 10: आर्थिक स्वतन्त्रता (Economic Liberty) का क्या अर्थ है?

उत्तर: प्रजातन्त्र तभी वास्तविक हो सकता है जब राजनीतिक स्वतन्त्रता के साथ–साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी हो। लेनिन (Lenin) के शब्दों में, ''नागरिक स्वतन्त्रता आर्थिक स्वतन्त्रता के बिना निरर्थक है।''

लॉस्की (Laski) के अनुसा, ''आर्थिक स्वतन्त्रता का अर्थ मनुष्य तो अपना दैनिक भोजन कमाते हुए युक्तियुक्त रूप में सुरक्षा व अवसर प्राप्त होता है।''

प्रत्येक नागरिक को बेकारी और अभाव के भय से स्वतन्त्र बनाया जाना ही सच्ची स्वतन्त्रता है। इसके लिए एक ओर मजदूरों के कुछ आर्थिक अधिकार हों जैसे काम पाने, उचित घण्टे काम करने, उचित मजदूरी पाने, अवकाश पाने, बेकारी, बीमारी, बुढ़ापे और दुर्घटना की अवस्था में सहायता व सुरक्षा पाने तथा मजदूर संघ बनाकर अपने हितों की रक्षा करने के लिए अधिकार तो दूसरी ओर मजदूरों को उद्योग–धन्धे के प्रबन्ध में भागीदार बनाया जाना चाहिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: ''स्वतन्त्रता का अर्थ उस वातावरण की स्थापना है जिसमें मनुष्यों को अपने पूर्ण विकास के लिए अवसर प्राप्त हो।''स्वतन्त्रता की यह परिभाषा किस विद्वान ने दी है?

(क) लॉस्की ने (ख) गैटेल ने
(ग) सीले ने (घ) लॉक ने

प्रश्न 2: अंग्रेजी भाषा के शब्द लिबर्टी (Liberty) की उत्पत्ति लैटिन भाषा के किस शब्द से हुई है?

(क) लिबर (ख) लाइवल
(ग) लिंगवा (घ) सुपरेनस

प्रश्न 3: स्वतन्त्रता के सकारात्मक स्वरूप से क्या अभिप्राय है?

(क) सभी प्रतिबन्धों का अभाव नहीं।
(ख) लोगों के अधिकारों की रक्षा।
(ग) व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए सहायक परिस्थितियाँ पैदा करना।
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4: निम्न में से किस विद्वान ने सकारात्मक स्वतन्त्रता का समर्थन किया?

(क) लॉक (ख) हरबर्ट स्पेन्सर
(ग) जे०एस०मिल (घ) टी०एच० ग्रीन

प्रश्न 5: नकारात्मक स्वतन्त्रता से क्या तात्पर्य है?

(क) कानून एक बुराई है (ख) स्व कार्यों में पूर्ण स्वतन्त्रता
(ग) सरकार का कार्य–क्षेत्र सीमित होना (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6: ''स्वतन्त्रता अति शासन का उल्टा रूप है? यह कथन किस विद्वान का है?

(क) लॉस्की का (ख) सीले का
(ग) जी०डी०एच० कोल का (घ) गैटेल का

प्रश्न 7: राजनीतिक स्वतन्त्रता से क्या अभिप्राय है?

(क) चुने जाने का अधिकार
(ख) धार्मिक स्वतन्त्रता
(ग) भाषण देने का अधिकार
(घ) देश के किसी भी भाग में निवास करने का अधिकार

प्रश्न 8: राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का क्या अर्थ है?

(क) राष्ट्र की विदेशी नियन्त्रण से स्वतन्त्रता
(ख) देश के बाह्म कार्यों में स्वतन्त्रता
(ग) विदेश की आर्थिक परतन्त्रता
(घ) देश के आन्तरिक कार्यों में स्वतन्त्रता

प्रश्न 9: निम्नलिखित में कौन–सा स्वतन्त्रता का संरक्षक नहीं है?

(क) लोकतन्त्र (ख) आर्थिक सुरक्षा
(ग) शक्ति का विकेन्द्रीकरण (घ) राज्याध्यक्ष

प्रश्न 10: ''व्यक्ति जितनी अधिक स्वतन्त्रता चाहता है, उतना ही अधिक उसे सत्ता के सामने झुकना पड़ता है।'' यह कथन किस विद्वान का है?

(क) जे०एस० मिल का (ख) हॉकिन्स का
(ग) लॉस्की का (घ) रिटशे का

प्रश्न 11:समाज का सदस्य होने के नाते एक व्यक्ति को कौन–सी स्वतन्त्रता प्राप्त होती है?

(क) प्राकृतिक स्वतन्त्रता (ख) आर्थिक स्वतन्त्रता
(ग) धार्मिक स्वतन्त्रता (घ) नागरिक स्वतन्त्रता

प्रश्न 12: निम्नलिखित में से कौन–सा तत्व स्वतन्त्रता का संरक्षक है –

(क) विधानमण्डल (ख) कार्यपालिका
(ग) न्यायपालिका (घ) मौलिक अधिकारों की घोषणा

प्रश्न 13: ''जहाँ कुछ लोग धनी तथा कुछ निर्धन, कुछ शिक्षित तथा कुछ अशिक्षित होते हैं। वहाँ हम सदैव स्वामी तथा दास का संबंध पाते हैं।'' यह कथन किसका है?

(क) माण्टेस्क्यू का (ख) लॉस्की का
(ग) गैटैल का (घ) टी०एच० ग्रीन का

प्रश्न 14: हम इस तथ्य को प्रमाणित मानते हैं कि सब मनुष्स समान बनाए गए हैं? यह कहाँ पर कहा गया है?–

(क) भारतीय संविधान में (ख) फ्रांस की राष्ट्रीय असेम्बली, 1789 में
(ग) अमेरिका के स्वाधीनता घोषणा–पत्र में (घ) इनमें से किसी में नहीं

उत्तर: (1) क, (2) क, (3) घ, (4) घ, (5) घ, (6) ख, (7) क, (8) क, (9) घ, (10) ख, (11) घ, (12) घ, (13) ख, (14) ग।

समानता

(Equality)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: समानता (Equality) का अर्थ बताइए।

उत्तरः साधारण शब्दों में समानता का अर्थ लिया जाता है कि सभी व्यक्ति समान हैं, सभी के साथ समानता का व्यवहार किया जाए और सभी को समान वेतन मिलना चाहिए, परन्तु समानता का यह अर्थ ठीक नहीं है। समानता का ठीक अर्थ यह है कि समाज में सभी प्रकार के विशेषाधिकार समाप्त कर दिए जाए और सभी को उन्नति तथा विकास के समान अवसर प्राप्त हों। व्यक्तियों में केवल उनकी जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर किसी प्रकार का भेद–भाव नहीं होना चाहिए।

परिभाषा– समानता की परिभाषाएँ निम्नलिखित हैंः–

1. लॉस्की (Laski) के अनुसार, ''समानता का अर्थ व्यक्ति का अपनी शक्तियों के यथासंभव प्रयोग के समान अवसर प्रदान करने के प्रयास करना है।''
2. स्टीफन (Stephen) के अनुसार, ''समानता से अभिप्राय मानव विकास को नियमित आवश्यक उपकरणों का समान विभाजन है।''

समानता का अभिप्राय विशेषाधिकारों का अभाव तथा राज्य में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को विकास के लिए समान अवसरों का प्रदान किया जाना।

प्रश्न 2: सामाजिक समानता (Social Equality)का क्या अर्थ है?

उत्तरः सामाजिक समानतार (Social Equality) का अर्थ है कि समाज में सब व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार होना चाहिए, सबको समान सामाजिक अधिकार मिलने चाहिए। किसी भी व्यक्ति के साथ उसके जन्म, स्थान, जाति, रंग, नस्ल तथा सम्पत्ति के आधार पर कोई भेद–भाव नहीं किया जाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) द्वारा भी (1948 ई०), जो मानव अधिकारों (Human Rights) के बारे में घोषणा की गई थी, उसमें सामाजिक समानता पर बहुत जोर दिया गया है।

प्रश्न 3: राजीतिक समानता(Political Equality) का क्या अर्थ है?

उत्तरः राजनीतिक समानता (Political Equality) का अर्थ है कि सभी नागरिकों को समान राजनैतिक अधिकार प्राप्त हो। किसी भी नागरिक को उसकी जाति, रंग, लिंग, सम्पत्ति, शिक्षा, धर्म आदि के आधार पर चुनाव लड़ने तथा मतदान करने के अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। जिस देश में ये सब अधिकार सभी नागरिकों को समान रूप से नहीं दिये जाते, वहाँ राजनीतिक समानता कायम नहीं रह सकती। उदाहरणस्वरूप, कुछ राज्यों में अब तक भी स्त्रियों को मताधिकार से वंचित रखा गया है।

प्रश्न 4: आर्थिक समानता(Economic Equality) का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः आर्थिकसमानता (Economic Equality) का अर्थ है कि लोगों में किसी प्रकार का आर्थिक भेदभाव नहीं होना चाहिए, परन्तु इसका यह अर्थ भी है कि सभी के पास समान धनराशि तथा सम्पत्ति हो या सभी को एक जैसा (समान) वेतन मिलना चाहिए। इस प्रकार की समानता बिल्कुल असंभव है। आर्थिक समानता का वास्तविक अर्थ यह है कि समाज में धनी तथा निर्धन के बीच का अन्तर कम से कम हो और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वेतन मिलना चाहिए अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को रोटी,

कपड़ा तथा मकान की आवश्यकताएँ पूरी होनी चाहिए। इस संबंध में लॉस्की (Laski) ने लिखा है ''कुछ व्यक्तियों के पास आवश्यकता से अधिक होने से पहले सब व्यक्तियों के पास आवश्यक पदार्थ (Basic Needs) होने चाहिए।'' लॉस्की (Laski) ने आगे कहा है, ''मुझे केक (Cake) खाने का कोई अधिकार नहीं है यदि मेरा पड़ोसी मेरे इस अधिकार के कारण, रोटी के बिना भूखा रहने के लिए लाचार होता है।''

प्रश्न 5: स्वतन्त्रता (Liberty) तथा समानता (Equality) के आपसी संबंधों का वर्णन करें।

उत्तर: स्वतन्त्रता तथा समानता के संबंधों के बारे में भिन्न–भिन्न विचार पेश किए गए हैं। डी० टाकविल (De Tocquville), लॉर्ड एक्टन (Lord Acton) आदि विचारकों का विचार है कि स्वतन्त्रता तथा समानता में कोई संबंध नहीं है। ''समानता के आवेश ने स्वतन्त्रता की आशा को व्यर्थ कर दिया है।'' जहाँ पर आर्थिक क्षेत्र में लोगों में बहुत अधिक असमानता होती है वहाँ पर गरीब लोगों के लिए स्वतन्त्रता का उपयोग करना असंभव हो जाता है।

हॉब्सन (Hobson) ने लिखा है, ''एक भूखे से मरते हुए व्यक्ति के लिए स्वतन्त्रता का क्या लाभ है? वह स्वतन्त्रता को न तो खा सकता है और न ही पी सकता है।'' इस प्रकार हम देखते हैं कि राजनीतिक स्वतन्त्रता के उचित प्रयोग के लिए आर्थिक समानता का होना अनिवार्य है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि स्वतन्त्रता तथा समानता में गहरा संबंध है और वास्तव में एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है।

प्रश्न 6: समानता की पांच विशेषताओं(Characteristics) का वर्णन करो।

उत्तर: समानता की पांच विशेषताओं का विवरण निम्नलिखित है:–

1. **विशेष अधिकारों का अभाव (Absence of Privileges)**: समानता की प्रथम विशेषता यह है कि समाज में किसी वर्ग विशेष अधिकार प्राप्त नहीं होने चाहिए। समाज के सभी लोगों को समान अर्थात् एक जैसे अधिकार व अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।
2. **उन्नति के समान अवसर (Equal Opporutnities)**:– समाज में सभी व्यक्तियों को उन्नति के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के आधार पर उन्नति कर सकें। किसी व्यक्ति के साथ धर्म, जाति, रंग, लिंग तथा धन के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता।
3. **मौलिक आवश्कताओं की पूर्ति (Fulfillment of Basic Needs)**: समाज के सभी व्यक्तियों की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए।
4. **उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण (Control over means of production)**: सम्पत्ति और उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण के संबंध में विद्वानों में मतभेद पाया जाता है।
5. **प्राकृतिक असमानताओं की समाप्ति (Removal of natural inequalities)**:– समानता की विशेषता यह है कि समाज में प्राकृतिक असमानताओं को नष्ट किया जाता है। यदि समाज में प्राकृतिक असमानता रहेगी तो समानता के अधिकार का कोई लाभ नहीं है।

प्रश्न 7: समानता के किन्हीं चार रूपों(Kinds) का वर्णन करो।

उत्तर: समानता के चार रूपों (Kinds) का वर्णन निम्नलिखित है:–

1. **प्राकृतिक समानता(Natural Equality)**: कुछ लोगों का विचार है कि सभी लोग जन्म से ही समान है। प्राकृतिक समानता की अवधारणा को 1789 में फ्रांस की मानव अधिकारों की घोषणा में माना गया है और

1776 की अमेरिका की स्वतन्त्रता घोषणा में भी माना गया है। परन्तु ऐसा विचार गलत है, क्योंकि लोगों में काफी असमानताएँ हैं जो जन्म से ही होती हैं और उनको समाप्त करना भी असंभव है।

2. **नागरिक समानता (Civil Equality)**: नागरिक समानता का अर्थ है कि नागरिक अधिकार सब लोगों के लिए समान हो, सब लोगों के लिए जीवन, स्वतन्त्रता, परिवार और धर्म आदि से संबंधित अधिकार पूरी तरह सुरक्षित हो। किसी भी व्यक्ति के साथ रंग, जाति, धर्म या लिंग आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए तथा सब लोग कानून के सामने बराबर हो (Equality before Law)।

3. **सामाजिक समानता (Social Equality)**: सामाजिक समानता का अर्थ है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समाज में समान समझा जाना चाहिए। किसी व्यक्ति के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

4. **आर्थिक समानता (Economic Equality)**: आर्थिक समानता का अर्थ है कि लोगों में किसी प्रकार का आर्थिक भेदभाव न हो। सभी के पास धन सम्पत्ति हो। सबकी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति हो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: नकारात्मक समानता से क्या अभिप्राय है?

(क) निम्न वर्गों को विशेष सुविधाएँ प्रदान करना।

(ख) विशेष अधिकारों का अभाव

(ग) अधिकारियों को विशेष अधिकार होना

(घ) राजनेताओं को सुविधाएँ देना।

प्रश्न 2: समानता के अर्थ के संबंध में कौन–सा कथन ठीक है?

(क) सबके साथ समान व्यवहार (ख) सब का समान वेतन

(ग) विशेषाधिकारों का अभाव (घ) इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 3: सकारात्मक समानता से क्या तात्पर्य है?

(क) समान अवसरों की प्राप्ति

(ख) राजनेताओं को विशेष अधिकार देना

(ग) अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति

(घ) राजनीतिक अधिकार प्रदान करना

प्रश्न 4: सामाजिक समानता का अर्थ है कि –

(क) समाज के प्रत्येक व्यक्ति समान है।

(ख) धर्म के आधार पर समानता

(ग) जाति व लिंग के आधार पर भेदभाव समाप्त

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5: समानता की पर्याप्त मात्रा स्वतन्त्रता की विरोधी न होकर उसके लिए अनिवार्य है।''यह कथन किस विद्वान का है?

(क) लॉस्की का (ख) लॉर्ड एक्टन का

(ग) आर०एच० टोनी का (घ) टी०एच० ग्रीन का

प्रश्न 6: निम्नलिखित में से किस प्रकार की समानता में सभी नागरिकों को शासन में भाग लेने का अधिकार होता है?

(क) आर्थिक समानता (ख) राजनीतिक समानता

(ग) सामाजिक समानता (घ) प्राकृतिक समानता

प्रश्न 7: राजनीतिक समानता से तात्पर्य है कि –

(क) वोट देने का अधिकार

(ख) सभी को चुने जाने का अधिकार

(ग) सरकार की आलोचना का अधिकार

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 8: आर्थिक समानता का अर्थ है कि –

(क) समान अवसरों की प्राप्ति

(ख) समान कार्य के लिए समान वेतन

(ग) आर्थिक शोषण समाप्त

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर: (1) ख, (2) ग, (3) क, (4) घ, (5) ग, (6) ख, (7) घ, (8) घ।

न्याय

(Justice)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: न्याय (Justice) की धारणा का क्या अर्थ है?

उत्तर: 'न्याय' शब्द, जिसे अंग्रेजी में (Justice) कहते हैं, कि उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द ''Jus'' से हुई है, जिसका अर्थ है – 'बंधन' अथवा 'बांधना'। प्लेटो (Plato) ने न्याय के बारे में कहा है, ''न्याय वह गुण है जो अन्य गुणों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।''

न्याय की परिभाषाएँ–

1. साल्मण्ड (Salmond) के अनुसार, ''न्याय का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसका भाग प्रदान करना।''
2. जे०एस० मिल (J.S. Mill) के अनुसार, ''न्याय उन नैतिक नियमों का नाम है जो मानव कल्याण की धाराओं से संबंधित है और इसीलिए जीवन के पथ–प्रदर्शन के लिए किसी भी अन्य नियम से महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है।''
3. बैन तथा पीटर (Ben and Peter) के अनुसार, ''न्यायपूर्ण कार्य का अर्थ है कि जब तक भेदभाव करने के लिए उचित कारण नहीं है, तब तक प्रत्येक व्यक्ति के साथ समान व्यवहार किया जाए।''
4. सेबाइन (Sabine) के अनुसार, ''न्याय एक ऐसा बंधन है जो व्यक्तियों को एक समान समाज के रूप में इकट्ठे करती है, ऐसे समाज में प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्राकृतिक योग्यता तथा प्रशिक्षण के अनुसार कार्य करता है।''

प्रश्न 2: न्याय के पाँच आधारभूत तत्वों का वर्णन करें।

उत्तर: न्याय के आधारभूत तत्व निम्नलिखित हैं:–

1. **कानून के समक्ष समानता (Equality Before Law)**: कानून के सामने सबको समान समझा जाना चाहिए और उन पर एक–से कानून लागू किए जाने चाहिए। जाति, धर्म, वंश, लिंग आदि के आधार पर बने भेदभाव के बिना सभी को कानून का समान संरक्षण मिलना चाहिए। सी०के० एलेन (C.K. Allen) ने यह है, ''जहाँ पक्षपात द्वार से अन्दर आया, न्याय खिड़की से बाहर गया।''
2. **सत्य (Truth)**: सत्य का अर्थ है, घटना का ज्यों–का–त्यों प्रस्तुतीकरण करना। न्यायालयों में तथ्यों की सत्यता का विशेष महत्व है।
3. **स्वतन्त्रता (Liberty)**: व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहिए। स्वतन्त्रता पर प्रतिबंध लगाना अन्याय है।
4. **मूल्यों की व्यवस्था की समानता (Same Law)**: इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक मामले में तथा विभिन्न परिस्थितियों में न्याय की एक ही धारणा का प्रयोग किया जाना चाहिए।
5. **प्रकृति की अनिवार्यताओं के प्रति सम्मान** (Respect for Nature): जो कार्य व्यक्ति के सामर्थ्य से बाहर है और कार्य प्रकृति की ओर से व्यक्ति के लिए असंभव है, उन्हें करने के लिए व्यक्ति को मजबूर करना न्याय की भावना के विरूद्ध है।

प्रश्न 3: सामाजिक न्याय(Social Justice) का क्या अर्थ है? अपने उत्तर की पुष्टि के लिए पाँच व्यवस्थाएँ लिखो।

उत्तरः भारत के सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश पी०बी० गजेन्द्र गड़कर के अनुसार, ''सामाजिक न्याय का अर्थ सामाजिक असमानताओं को समाप्त करके सामाजिक क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर प्रदान करना है।''

सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए विभिन्न व्यवस्थाओ में से पांच व्यवस्थाएँ निम्नलिखित हैंः–

1. **कानून के समक्ष समानता (Equality before Law)**: सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि कानून की दृष्टि से सभी लोगों को समान समझा जाए। किसी व्यक्ति के साथ रंग, जाति, धर्म, लिंग, वंश आदि के आधार पर भेदभाव न किया जाए। सभी लोगों के लिए एक जैसे कानून होने चाहिए।
2. **सामाजिक समानता (Social Equality)**: समाज में सभी व्यक्ति समान समझे जाने चाहिए और सबको अपने जीवन के विकास के लिए समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। सब पर एक ही कानून लागू होने चाहिए और कानून के सामने सब सदस्य समान होने चाहिए।
3. **समान अधिकार (Equal Rights)**: सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। यदि किसी वर्ग अथवा व्यक्ति को रंग, जाति, वंश, धर्म, लिंग आदि के आधार पर अधिकारों से वंचित किया जाता है तो वहाँ पर सामाजिक न्याय नहीं हो सकता है।
4. **पिछड़े वर्गों के लिए विशेष सुविधाएँ (Privilegs for Backward Classes)**: समाज के पिछड़े वर्ग को आगे बढ़ने के लिए विशेष सुविधाएँ प्रदान करने की व्यवस्था करता है।
5. **असमानता को हटानाः** समाज में फैली असमानताओं को कम करने का प्रयास करता है। इसी के अन्तर्गत भारत में छुआछूत को समाप्त किया गया है और गैर–कानूनी घोषित किया गया है। जिस समाज में एक वर्ग को अछूत (Untouchable) माना जाता हो, वहाँ सामाजिक न्याय की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

प्रश्न 4: न्याय के आर्थिक (Economic Aspect) की व्याख्या करें।

उत्तरः आर्थिकन्याय (Economic Justicer) से अभिप्राय प्रत्येक व्यक्ति को धन प्राप्त करने तथा जीवन में उसका प्रयोग करने के लिए समान अवसर प्रदान करना। आर्थिक न्याय के आधारभूत तत्व निम्नलिखित हैं–

(i) सभी नागरिकों को मूलभूत आवश्यकताएँ (Basic Necessities) पूरी होनी चाहिए।

(ii) प्रत्येक व्यक्ति को आजीविका के साधन उपलब्ध कराने चाहिए और व्यक्ति को अपने काम के लिए उचित मजदूरी मिलनी चाहिए। किसी व्यक्ति का शोषण नहीं होना चाहिए।

(iii) आर्थिक न्याय का यह भी अथ है कि विशेष परिस्थितियों में व्यक्ति को राजकीय सहायता प्राप्त करने का अधिकार हो। बुढ़ापे, बेरोजगारी तथा असमर्थता में राज्य सामाजिक एवं आर्थिक संरक्षण प्रदान करें।

(iv) स्त्रियों और पुरूषों को समान कार्य के लिए समान वेतन मिलना चाहिए।

(v) सम्पत्ति और उत्पादन के साधनों के नियंत्रण के संबंध में विद्वानों में मतभेद पाया जाता है।

आर्थिक न्याय की प्राप्ति के उपाय (Ways to Secure Economic Justice): आर्थिक न्याय की प्राप्ति तथा सभी लोगों को कार्य देने के लिए सरकार का उत्तरदायी होना चाहिए तथा कार्य न देने की अवस्था में सरकार की ओर से बेरोजगारी (unemployment allowance) भत्ता दिया जाना चाहिए। अपाहिज हो जाने अथवा बीमारी या वृद्धा–अवस्था में लोगों को आर्थिक तथा सामाजिक सुरक्षा का अधिकार प्राप्त होना

अनिवार्य है। आर्थिक न्याय की प्राप्ति तभी संभव हो सकती है, यदि निर्बल वर्गों तथा श्रमिकों के हितों की सुरक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध किए जाए।

प्रश्न 5: न्याय(Justice) तथा स्वतन्त्रता (Liberty) के बीच संबंध लिखिए।

उत्तर: न्याय का अर्थ है कि व्यक्ति को अपने विकास के लिए उचित अवसर प्रदान किए जाएं, परन्तु एक स्वतन्त्र राज्य ही ऐसे वातावरण की स्थापना कर सकता है। जिसमें व्यक्ति का विकास संभव हो। वही समाज न्यायपूर्ण कहलाने का अधिकारी है। जहाँ नागरिकों को स्वतन्त्रताएँ प्रदान की जाए, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि स्वतन्त्रताएँ निरंकुश व पूर्ण हो। यदि स्वतन्त्रताओं पर प्रतिबंध न लगाया जाए, तो समाज में अराजकता व अव्यवस्था फैल जाएगी। ऐसे वातावरण में न्याय की कल्पना करना संभव नहीं होगा।

प्रश्न 6: न्याय (Jusstice) समानता (Equality)केसाथ संबंध बताओ।

उत्तर: कानून के सामने सभी समान हों और कानून सबकी समान रूप से रक्षा करें। धर्म, जाति, भाषा, रंग, लिंग आदि के आधार पर नागरिकों में कोई भेदभाव न किया जाए। होटल, पार्क, दुकान तथा दूसरे सार्वजनिक स्थानों पर सभी लोगों की पहुंच होनी चाहिए। शिक्षा के दरवाजे सबके लिए खुले होने चाहिए। आर्थिक समानता का अभिप्राय है कि सभी के लिए रोजगार हो, काम करने के घण्टे निश्चित हो। दिन–प्रतिदिन की आवश्यक चीजें लोगों को आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए। इसी तरह से उन्नति के अवसर पर सभी लोगों को समान प्राप्त होने चाहिए।

प्रश्न 7: आर्थिक–न्याय (Economic Justice) के चार लक्षणों का विवेचन करो।

उत्तर: आर्थिक न्याय (Economic Justice) के चार लक्षण निम्नलिखित हैः–

1. **काम का अधिकार (Right to Work)**: प्रत्येक नागरिक को काम मिलना चाहिए। काम न मिलने की स्थिति में उन्हे बेरोजगारी भत्ता (Unemployment allowance) दिया जाना चाहिए।
2. **समान काम के लिए समान वेतन (Equal Pay for Equal Work)**: पुरुष व महिलाओं को समान काम के लिए समान वेतन मिले। महिलाओं की मजबूरी का लाभ न उठाया जाए। एक–से श्रमिकों का वेतन सभी जगह एक सा होना चाहिए।
3. **न्यूनतम भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति (Fulfilment of Basic Needs)**: मनुष्य की कुछ भौतिक आवश्यकताएँ (Basic Needs) हैं। उनकी पूर्ति होनी अनिवार्य है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति न होने की स्थिति में लोकतन्त्र व राजनीतिक स्वतन्त्रता के बारे में सोचना एक ढांग व दिखावा (myth) है, क्योंकि अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में लगा हुआ व्यक्ति राजनीतिक के बारे में सोच ही नहीं सकता।
4. **आर्थिक सुरक्षा (Economic Security)**: इसका अर्थ है कि बुढ़ापे, बीमारी, अपंग और असहाय होने की स्थिति में जब व्यक्ति अपनी रोजी–रोटी नहीं कमा सकता तो राज्य द्वारा उसकी आर्थिक सहायता होनी चाहिए। उन्हें पेंशन, निःशुल्क चिकित्सा आदि की सुविधाएँ प्राप्त होनी चाहिए।

प्रश्न 8: न्याय के राजनीतिक (Political Justice) पक्ष के अर्थ को स्पष्ट करो।

उत्तर: न्याय के राजनीतिक पक्ष (Political Justice) का अर्थ निम्नलिखित ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है –

न्याय का राजनीतिक पक्ष (Political Justice): राजनीतिक न्याय से तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को शासन को प्रभावित करने का अधिकार होना चाहिए। समाज में प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के राजनीतिक अधिकार प्राप्त होने चाहिए। राजनैतिक न्याय की मांग है कि शासन की शक्तियाँ कुछ लोगों में

केन्द्रित न होकर समस्त जनता में निहित होनी चाहिए और जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि ही उन शक्तियों का प्रयोग करें। न्याय के राजनीतिक पक्ष में तीन मुख्य बातों पर बल दिया जाता है –

(i) राजनीतिक जीवन पर लोकतान्त्रिक आधार पर गठित संस्थाओं का नियंत्रण होना चाहिए। प्रत्येक नागरिक को बिना किसी भेदभाव के वोट का अधिकार मिले और बिना किसी भेदभाव के चुनाव में निर्वाचित होने का अधिकार भी मिले।

(ii) दूसरी बात जो राजनीतिक न्याय के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक नागरिक को अपने विचार प्रकट करने का सरकार की आलोचना करने का अधिकार होना चाहिए।

(iii) जनता को अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न समुदायों का निर्माण करने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए अर्थात् राजनीतिक दल, दबाव–समूह व राजनीतिक समूह बनाने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए।

प्रश्न 9: रॉल्स (Rawls) के न्याय सिद्धान्त की चार विशेषताएँ लिखो।

उत्तर: रॉल्स (Rawls) के न्याय सिद्धान्त की चार विशेषताएँ निम्नलिखि हैं–

1. **समाज में न्याय का प्रथम स्थान (Justice First and Foremost)**: रॉल्स का कहना है कि उत्तम समाज के बहुत से गुण होते हैं, लेकिन न्याय को समाज का सर्वोत्तम माना जाता है। रॉल्स की यह मान्यता है कि समाज में न्याय से ऊपर और गुण हो सकते हैं लेकिन न्याय की अवहेलना नहीं की जा सकती क्योंकि न्याय की अवहेलना से समाज कल्याण को धक्का पहुंचता है और समाज नैतिक पतन की ओर अग्रसर होता है।

2. **प्राथमिक वस्तुओं का न्यायपूर्ण वितरण (Judicial Distribution of "Primary Goods")**: रॉल्स उदार लोकतन्त्र के पक्ष में है और इसमें स्वतन्त्रताएँ और अधिकार प्राप्त होते हैं। वह इन स्वतन्त्रताओं और अधिकारों को 'प्राथमिक वस्तुओं' (Primary Goods) का नाम देता है। इस तरह राज्य के न्याय के सिद्धान्त के अनुसार इन 'प्राथमिक वस्तुओं' का समाज में न्यायपूर्ण वितरण होना चाहिए।

3. **अवसरों की समानता (Equality of Opporutnities)**: रॉल्स, पूंजीवाद का समर्थक था जिसमें उन्हें उद्योग व कारखाने समानता के आधार पर चलाने का मौका मिलता है। लेकिन सरकार द्वारा उन पर कुछ प्रतिबन्ध लगाए जाते हैं। सरकार को ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए कि जिसमें

   (i) प्रतियोगी– बाजार पूरी तरह प्रतियोगी बना रहे अर्थात् वस्तुएं मांग व पूर्ति के आधार पर बाजार में बिके।

   (ii) सर्वोत्तम प्रयोग – भौतिक साधनों का सर्वोत्तम प्रयोग होना चाहिए।

   (iii) विकेन्द्रीकरण – सम्पत्ति का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए।

   (iv) प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति – लोगों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए।

   (v) समान अवसर – सभी को उन्नति करने का समान अवसर मिले। सभी को शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर मिलना चाहिए।

4. **क्षतिपूर्ति की अवधारणा (Theory of Compensation)**: रॉल्स स्वतन्त्रता व समानता और अवसरों की समानता के सिद्धान्त की बात करता है कि राज्य का यह कर्तव्य है कि धन का न्यायिक वितरण होना चाहिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: ''न्याय उस व्यवस्था का नाम है जिसके द्वारा व्यक्तिगत अधिकार की भी रक्षा होती है और समाज की मर्यादा भी बनी रहती है'' – यह शब्द किस विद्वान के है?

(क) साल्मण्ड (ख) आर्नोल्ड

(ग) डी०डी० राफेल (घ) जे०एस० मिल

प्रश्न 2: ''न्याय का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति को उसका अधिकार प्रदान करना है'' – ये शब्द किस विद्वान के हैं?

(क) साल्मण्ड (ख) पीटर्स

(ग) बेन (घ) इनमें से किसी के भी नहीं।

प्रश्न 3: ''न्याय उन मान्यताओं और प्रतिक्रियाओं की व्यवस्था है, जिसमें समाज द्वारा मान्य सभी अधिकार व सुविधाएँ दी जाती हैं'' – ये शब्द निम्नलिखित में से किसने कहे?

(क) जे०एस० मिल (ख) पीटर्स

(ग) मैरियम (घ) आर्नोल्ड

प्रश्न 4: न्याय के बारे में निम्नलिखित में से एक सही नहीं है –

(क) सत्य (ख) निष्पक्षता

(ग) स्वतन्त्रता (घ) विभिन्न बन्धन

प्रश्न 5: 'राजनीतिक न्याय' निम्नलिखित में से एक है –

(क) सामाजिक जीवन में भागीदारी (ख) आर्थिक जीवन में भागीदारी

(ग) शासन में भागीदारी (घ) खेल–कूद में भागीदारी

प्रश्न 6: सामाजिक न्याय के सदंर्भ में निम्नलिखित में से एक सही है –

(क) सामाजिक व्यवस्था में सुधार (ख) सामाजिक समानता

(ग) विशेषाधिकारों की समाप्ति (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 7: ''समान सामाजिक अधिकारों की व्यवस्था करना ही सामाजिक न्याय है'' – ये शब्द किस लेखक के हैं?

(क) लॉस्की (ख) बार्कर

(ग) हॉब्स (घ) प्लेटो

प्रश्न 8: आर्थिक न्याय के संबंध में निम्नलिखित एक सही नहीं है –

(क) काम का अधिकतर (ख) आर्थिक सुरक्षा

(ग) श्रमिकों के हितों की रक्षा (घ) सामाजिक शोषण

प्रश्न 9: वितरणात्मक न्याय के सिद्धान्त के प्रवर्तक कौन थे?

(क) रूसो (ख) मार्क्स

(ग) जॉन राल्स (घ) ऐंजल्स

प्रश्न 10: "A Theory of Justice" नामक पुस्तक किस विद्वान ने लिखी?

(क) जॉन राल्स (ख) जॉन लॉक

(ग) रूसो (घ) आस्टिन

उत्तरः (1) ग, (2) क, (3) ग, (4) क, (5) ग, (6) घ, (7) क, (8) घ, (9) ग, (10) क।

न्याय का समाजवादी सिद्धान्त

(Social Theory of Justice)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1: मार्क्सवादी सिद्धांत (Marxist Theory) के अनुसार न्याय का अर्थ बताओ।

उत्तर: न्याय के संबंध में विभिन्न सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए हैं। इनमें से मार्क्सवादी सिद्धान्त एक सिद्धान्त है। साधारण शब्दों में न्याय के मार्क्सवादी सिद्धान्त के अनुसार समाज में वर्ग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। यह सिद्धान्त वर्गहीन व राज्यहीन समाज की स्थापना करने के पक्ष में है समाज प्राचीन समय से ही दो वर्गों में बंटा हुआ है, और दोनों वर्गों में संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। लॉस्की (Laski) ने कहा है, ''यदि मार्क्स के दिल को टटोला जाए तो पता चलेगा कि न्याय के प्रति उसमें कितना आवेग था।'' इस प्रकार के विचार का लिंडसे (Lindsay) ने समर्थन किया है, ''मार्क्स में न्याय का भावावेग देखने को मिलता है।''

मार्क्स (Marx) व ऐंजल्स (Angles) ने शोषण के प्रति रोष प्रकट किया है। भौतिक समाज को तब तक न्यायपूर्ण नहीं बनाया जा सकता, जब तक वर्ग–भेद पर आधारित शोषण समाप्त नहीं हो जाता। इसलिए मार्क्सवादी जिस न्यायपूर्ण समाज की स्थापना करना चाहते हैं, उसके लिए वर्ग–संघर्ष अनिवार्य है। अतः वर्गहीन समाज जिसमें किसी का शोषण न होता हो वह ही न्यायपूर्ण समाज है।

प्रश्न 2: न्याय के समाजवादी सिद्धान्त (Socialist Theory of Justice)की चार विशेषताएँ लिखो।

उत्तर: न्याय के समाजवादी सिद्धान्त की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:–

1. **पूंजीवाद का विरोध (Against Capitalism)**: समाजवाद की स्थापना के लिए उत्पादन व वितरण के साधनों पर राज्य के अधिकार का समर्थन किया है।
2. **राज्य शोषण का साधन नहीं है (State not an agency for exploitation)**: समाजवादियों ने साम्यवाद की इस धारणा की आलोचना की कि राज्य, शोषण की एक मशीन है। इसके विपरित वे उत्पादन व वितरण के साधनों पर नियंत्रण की बात करते हैं।
3. **उत्पादनद के साधनों पर सार्वजनिक नियंत्रण (Control of state over means of production)**: समाजवाद उत्पादन के साधनों पर सार्वजनिक नियंत्रण के पक्ष में है। वह निजी उद्योगों को समाप्त कर उत्पादन के सभी साधनों का राष्ट्रीयकरण करना चाहेगा।
4. **कल्याणकारी राज्यों की अवधारणा (Concept of Welfare State)**: लोकतान्त्रिक समाजवादी राज्य की कल्याणकारी अवधारणा प्रस्तुत करते हैं। उनका कहना है कि राज्य एक और समाज के हित के कार्यों को करता है, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा तथा सामाजिक सुरक्षा आदि के कार्य और दूसरी ओर समाज के दुर्बल वर्गों की सुख–सुविधाओं की विशेष व्याख्या करता है।

प्रश्न 3: सामाजिक न्याय के सिद्धान्त की आलोचना के चार शीर्षक लिखो।

उत्तर: समाजवादी न्याय के सिद्धान्त की आलोचना के चार शीर्षक निम्नलिखित हैं:–

1. **इससे व्यक्तिगत उत्साह नष्ट हो जाता है (Discourages individual's initiative)**: प्रत्येक व्यक्ति अधिक से अधिक निजी सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए कार्य करता है। समाजवाद में व्यक्ति में सरकार नियंत्रण के अधीन अधिक उत्पादन करने का उत्साह घट जाएगा।

2. **समाजवाद व्यवहार में असफल हो जाएगा (Failure)**: आलोचकों का कथन है कि समाजवाद व्यवहार में असफल हो जाएगा। समाजवाद आर्थिक असमानता कथा सामाजिक दुःखों को दूर करके शान्त और आर्थिक समृद्धि लाना चाहता है, परन्तु व्यवहार में ऐसा करना बहुत कठिन है।

3. **नौकरशाही का बोल–बाला रहता है (Dominance of Bureaucracy)**: समाजवादी व्यवस्था में 'लाल फीताशाह' (Red Tapism) का बोलबाला रहता है, अर्थात् फाइलें एक डेस्क से दूसरे डेस्क पर घूमती रहती है, पर निर्णय कुछ भी नहीं हो पाता। इससे राष्ट्र के साधनों की बर्बादी होती है।

4. **स्वतन्त्रता सीमित हो जाती है (Liberty Curbed)**: राज्य के कार्य–क्षेत्र के विस्तार का अर्थ है – व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का कम हो जाना। समाजवादी व्यवस्था में व्यक्ति राज्य रूपी मशीन का छोटा सा पुर्जा बनकर रह जाता है।

प्रश्न 4: न्याय का अराजकतावादी सिद्धान्त (Anarchist Theory of Justice) क्या है?

उत्तरः **न्याय का अराजकतावादी सिद्धान्त (Anarchist Theory of Justice)**: अराजकतावादियों के न्यायपूर्ण समाज की अवधारणा को समझने से पहले 'अराजकतावाद' को समझना आवश्यक हो जाता है। साधारण भाषा में अराजकतावाद (Anarchy) का अर्थ लूटमार, हत्या, आतंक व अव्यवस्था से लिया जाता है, लेकिन राजनीति शास्त्र की भाषा में ''अराजकतावाद वह सिद्धान्त है, जो राजनीतिक सत्ता को एक बुराई मानता है, और इसलिए सत्ता अनावश्यक और अवांछनीय है।'' अराजकतावादियों का मानना है कि राज्य अन्याय व हिंसात्मक होता है। इसलिए वे राज्य को नष्ट करने के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। अराजकतावादियों का कहना है कि मनुष्य प्रारंभ से सरल स्वभाव वाला है। वह किसी को कष्ट नहीं देना चाहता और न ही वह किसी की सम्पत्ति छीनता है, लेकिन राज्य के कानून समाज में असमानता पैदा कर लेते हैं। राज्य के कानून ही व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के शोषण को प्रोत्साहित करते हैं। अराजकतावादी राज्य को समाप्त करके व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समुदायों के निर्माण पर बल देते हैं। इस सिद्धान्त के मुख्य समर्थक विलियम गोडविन (William Godwin), जोजेफ प्रौफन (Joseph Profin), माइकल बाकूनिन (Michel Bakunin), एवं पीटर क्राफ्टकीन (Peter Cropotkin) है।

प्रश्न 5: अराजकतावादी न्याय (Anarchist Theory) के सिद्धान्त की चार विशेषताएँ(Characteristics) लिखो।

उत्तरः अराजकतावादी न्याय के सिद्धांत की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैः–

1. **राज्य के प्रति विरोध (Against State)**: अराजकतावादी न्याय का सिद्धान्त राज्य के प्रति घोर विरोध प्रकट करता है। वह राज्य की सत्ता का विरोध करता है। राज्य शक्ति और हिंसा पर आधारित है। राज्य की प्रकृति पूर्णतया अन्यायी है। राज्य बल का प्रयोग करता है और इससे अच्छा से अच्छा व्यक्ति भी भ्रष्ट हो जाता है। अतः राज्य एक बुराई है (State is an evil)।

2. **राज्य की समाप्ति (End of State)**: अराजकतवादी न्याय के सिद्धान्त को राज्य की एक बुराई मानकर इसे समाप्त करने के पक्ष में है। उनका विचार है कि राज्य की पुलिस, अपराधों को कम करने की बजाए उन्हें बढ़ावा देती है, अव्यवस्था में बढ़ोतरी करती है। अतः अराजकतावादी ऐसे अन्यायी राज्य को समाप्त करना चाहते हैं।

3. **सम्पत्ति की संस्था का विरोध (Against Private Property)**: अराजकतावादी साम्यवादियों की तरह सम्पत्ति की संस्था को अन्याय का मूल कारण मानते हैं। इसलिए वे व्यक्तिगत सम्पत्ति की वर्तमान प्रणाली का विरोध करते हैं। व्यक्तिगत सम्पत्ति श्रमिकों के शोषण का साधन है। राज्य व्यक्तिगत सम्पत्ति की रक्षा करता है इसलिए वह ऐसे मुट्ठी भर लोगों के हाथों का खिलौना बन जाता है, जिन्होंने सम्पत्ति पर अपना

निजीस्वामित्व स्थापित कर लिया है। न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए वे व्यक्तिगत सम्पत्ति को समाप्त करना चाहते हैं।

4. **धर्म की समाप्ति (Ends of Religion)**: अराजकतावादी न्याय की अवधारणा में धर्म का कोई स्थान नहीं है। वे धर्म को अफीम की तरह मानते हैं। धर्म व्यक्तियों की उन्नति के मार्ग में एक बाधा है। धर्म के नाम पर गरीबों का शोषण किया जाता है। धर्म के प्रभाव को समाप्त करके ही समाज में न्याय की स्थापना की जा सकती है।

प्रश्न 6: न्याय के अराजकतावादी सिद्धान्त की आलोचना(Criticism)के चार सिद्धान्त लिखो।

उत्तर: न्याय के अराजतावादी सिद्धान्त की आलोचना (Criticism) के चार आधार निम्नलिखित हैः–

1. **राज्य की धारणा गलत है (Concept of State-wrong)**: अराजकतावादियों की राज्य की धारणा गलत है। वे राज्य को एक बुराई मानते हैं। वास्तव में राज्य स्वतन्त्रता का विनाशक नहीं बल्कि पोषक है।

2. **राज्य के आधार गलत है**: अराजकतावादी शक्ति को राज्य का आधार मानते हैं। इसी शक्ति के आधार पर राज्य लोगों का शोषण करता है। वास्तव में 'राज्य का आधार शक्ति नहीं, बल्कि लोगों की इच्छा है।' (Will not the force is the basis of state)

3. **मानव प्रकृति में अत्यधिक विश्वास (Too much faith in Human Nature)**: अराजकतावादियों का मनुष्य की प्रकृति में अधिक विश्वास है। उनका विचार है कि मनुष्य प्रकृति से बहुत अच्छा है और यदि उसे स्वतन्त्र छोड़ दिया जाए तो वह अच्छे कार्य ही करेगा, लेकिन मनुष्य की प्रकृति का यह चित्रण काल्पनिक है क्योंकि मनुष्य सदैव अच्छा नहीं होता।

4. **काल्पनिक व अव्यवहारिक (Imaginary)**: अराजकतावादी जिस राज्य विहीन व वर्ग–विहीन राज्य की बात करते हैं, वह काल्पनिक तो है ही साथ ही अव्यवहारिक भी है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Multiple Choice)

प्रश्न 1: मार्क्स समाज को कितने वर्गों में विभाजित करता है?

(क) दो वर्गों में (ख) तीन वर्गों में

(ग) पाँच वर्गों में (घ) इनमें से कोई भी नहीं

प्रश्न 2: मार्क्सवादी न्यायपूर्ण समाज के निम्नलिखित समर्थक हैं–

(क) लेनिन (ख) ऐंजल्स

(ग) रैल्फ गिलिबैण्ड (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3: "मार्क्स में न्याय का भावावेश देखने को मिलता है" यह शब्द किसने कहे?

(क) लॉस्की (ख) लिंडसे

(ग) बर्क (घ) ऐंजल्स

प्रश्न 4: न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की जा सकती है –

(क) संघर्ष द्वारा (ख) राज्य द्वारा

(ग) शिक्षा द्वारा (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5: मार्क्सवादी न्यायपूर्ण समाज के बारे में सही है–

(क) निजी सम्पत्ति की समाप्ति

(ख) राज्य की समाप्ति

(ग) प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार फल मिलेगा।

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6: समाजवाद के बारे में निम्नलिखित सही है–

(क) पूंजीवाद का विरोध (ख)राज्य शोषण का साधन नहीं है

(ग) कल्याणकारी राज्य की अवधारणा (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 7: ''समाजवाद एक गिरगिट की तरह परिस्थितियों के अनुकूल अपना रंग बदलता रहता है'' यह शब्द किस विद्वान के हैं?

(क) रैम्जे म्योर (ख) लॉस्की

(ग) मार्क्स (घ) गाँधी

प्रश्न 8: ''यह एक ऐसे टोप के समान हो गया है, जिसका हर किसी द्वारा पहने जाने के कारण उसकी कोई शक्ल नहीं रह गई है।'' यह शब्द किसके हैं?

(क) जय प्रकाश नारायण (ख) आशीर्वादम

(ग) ईमाईल (घ) सी०ई०एम० जोड

प्रश्न 9: अराजकतावाद के बारे में निम्नलिखित सही है –

(क) राज्य की समाप्ति (ख) सम्पत्ति की संस्था का विरोध

(ग) धर्म की समाप्ति (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10: निम्नलिखित में से कौन–सा सिद्धान्त राज्य को एक आवश्यक बुराई मानता है?

(क) व्यक्तिवादी सिद्धान्त (ख) मार्क्सवादी सिद्धान्त

(ग) समाजवादी सिद्धान्त (घ) उपरोक्त में से कोई भी नहीं

प्रश्न 11:निम्नलिखित में से समाजवाद का समर्थक था –

(क) लॉस्की (ख) हाब्स

(ग) लॉक (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरः (1) क (2) ख, (3) ख, (4) क, (5) घ, (6) घ, (7) क, (8) घ, (9) घ, (10) घ, (11) घ।